।। ओ३म् ।।

www.aryawartkesari.com

आर्यावर्त केसरी

आर.एन.आई.सं.
UPHIN/2002/7589
डाक पंजी. सं.
UPMRD Dn-64/2021-23

दयानन्दाब्दः 198
मानव सृष्टि सं. : 1960853123
सृष्टि सं.: 1972949123

विश्व भर में प्राच्य वैदिक संस्कृति तथा भारतीयता का उद्घोषक पाक्षिक

ARYAWART KESARI
Amroha U.P.-244221 India

संरक्षक सहयोग : रू. 5100/- आजीवन : रू.1100/- वार्षिक शुल्क : रू.100/- (विदेश में) 5 वर्ष के लिए 35 डॉलर

वर्ष-21 अंक-23 मिति चैत्र कृष्ण नवमी से चैत्र शुक्ल दशमी तक 2080 विक्रमी 16 से 31 मार्च 2023 अमरोहा (उ.प्र.) मूल्य : प्रति -5/-

महर्षि दयानंद सरस्वती की 200 वीं जयंती श्रृंखला का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया भव्य उद्घाटन

प्रधानमंत्री ने किया महर्षि दयानंद की शिक्षाओं, उपकारों और उल्लेखनीय सेवाओं का मुक्त कंठ से बखान

देश-विदेश की आर्य प्रतिनिधि सभाओं, शिक्षण संस्थानों और आर्य समाजों की भारी उपस्थिति से खचाखच भरा स्टेडियम

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

नई दिल्ली। आर्य समाज के इतिहास में वर्ष 2024 व 25 ऐतिहासिक होने जा रहे हैं। अवसर है सन 2024 में आर्य समाज के संस्थाप्क महर्षि दयानंद की 200 वीं जयंती है और 2025 में आर्य समाज की स्थापना का 150 वां वर्ष है। संपूर्ण आर्य जगत के लिए यह गौरव की बात है कि भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली के इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती के उपलक्ष्य में दो साल तक चलने वाले द्वि शताब्दी समारोह श्रृंखला का उद्घाटन किया।

इंदिरा गांधी स्टेडियम में संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री जी केसरी।

यह सर्व विदित ही है कि आर्य समाज द्वारा मनाए जाने वाले पर्वो में महर्षि दयानंद सरस्वती जी का जन्मोत्सव सदैव प्रमुख पर्व रहा है। इससे भी आगे जब महर्षि की 200 वीं जन्म जयंती का अवसर हो, तब तो संपूर्ण आर्य जगत में अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास का होना स्वाभाविक ही है, जिसका दिग्दर्शन सम्पूर्ण भारत सहित विश्व भर ने 12 फरवरी 2023 को इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में किया। वास्तव में महर्षि दयानंद सरस्वती की 200 वीं जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों का शुभारंभ 12 फरवरी 2023 को इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में अपनी अभूतपूर्व ऐतिहासिक सफलता के साथ सम्पन्न होना, संपूर्ण आर्य जगत के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। उल्लेखनीय है कि 31 दिसंबर 2022 को आर्य समाज का एक प्रतिनिधिमंडल गुजरात के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत के नेतृत्व में भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी से मिला था। उस समय आर्य समाज द्वारा महर्षि की 200 वीं जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों के शुभारंभ अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को आमंत्रित किया गया था। लगभग आधी जनवरी बीत जाने के बाद प्रधानमंत्री जी की स्वीकृति प्राप्त हुई और एक महीने से भी कम समय में इतना भव्य, विराट और विशाल आयोजन करना, जिसमें विश्व के सबसे लोकप्रिय, विख्यात प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी पधार रहे हों, उनका आर्य समाज की ओर से भव्य स्वागत करना, और आर्य समाज के संदेश को जन जन तक पहुंचाना अपने आप में किसी बड़ी चुनौति से कम नहीं थी।

12 फरवरी 2023 को प्रातः काल से ही इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम का परिसर पूरी तरह से खचाखच भरा हुआ था। सुबह 9 बजे तक स्टेडियम के अंदर 30 हजार से भी अधिक आर्य नर_नारी पहुंच चुके थे। अब भीतर पैर रखने की भी जगह नहीं बची थी, और 10:30 बजे सुरक्षा की दृष्टि से सभी द्वार बंद होने के कारण बहुत से आर्य जन बाहर ही रह गए थे।

विस्तृत समाचार एवं चित्र पृष्ठ 3 एवं 4 पर

प्रधानमंत्री ने श्रद्धा पूर्वक की यज्ञ में सहभागिता

इस अवसर पर सबसे पहले प्रधानमंत्री ने सार्वदेशिक सभा द्वारा आयोजित भव्य विश्व कल्याण यज्ञ में हिस्सा लिया और श्रद्धा पूर्वक यज्ञ में पवित्र वेद मंत्रों से आहुतियां समर्पित की। महर्षि दयानंद जी की 200वीं जन्म जयंती समारोह श्रृंखला के शुभारम्भ का ये अवसर ऐतिहासिक रहा और भविष्य के इतिहास को निर्मित करने के अवसर का एक बड़ा संकेत भी है।

यह है समूची मानवता के लिए प्रेरणा का पल

इस मौके पर पीएम मोदी ने कहा कि जो बीज स्वामी जी ने रोपा था, वह आज विशाल वट-वृक्ष के रूप में पूरी मानवता को छाया दे रहा है। जब महर्षि दयानंद का जन्म हुआ था तब देश सदियों की गुलामी से कमजोर पड़ कर अपनी आभा, अपना तेज, अपना आत्मविश्वास सब कुछ खोता चला जा रहा था। प्रति क्षण हमारे संस्कार, आदर्श को चूर-चूर करने का प्रयास होता था। महिलाओं को लेकर भी समाज में जो रूढ़ियां पनप गईं थीं, महर्षि दयानन्द जी उनके खिलाफ भी एक तार्किक और प्रभावी आवाज बनकर उभरे। उन्होंने कहा कि यह अवसर ऐतिहासिक है और भविष्य के इतिहास को निर्मित करने का है। पी.एम. श्री मोदी ने आगे कहा कि ये समूची मानवता के भविष्य के लिए प्रेरणा का पल है। स्वामी दयानंद जी का आदर्श था- ह्यकृण्वन्तो विश्वमार्यम्ह्न अर्थात "हम पूरे विश्व को श्रेष्ठ बनाएं"। हम पूरे विश्व में श्रेष्ठ विचारों व मानवीय आदर्शों का संचार करें।

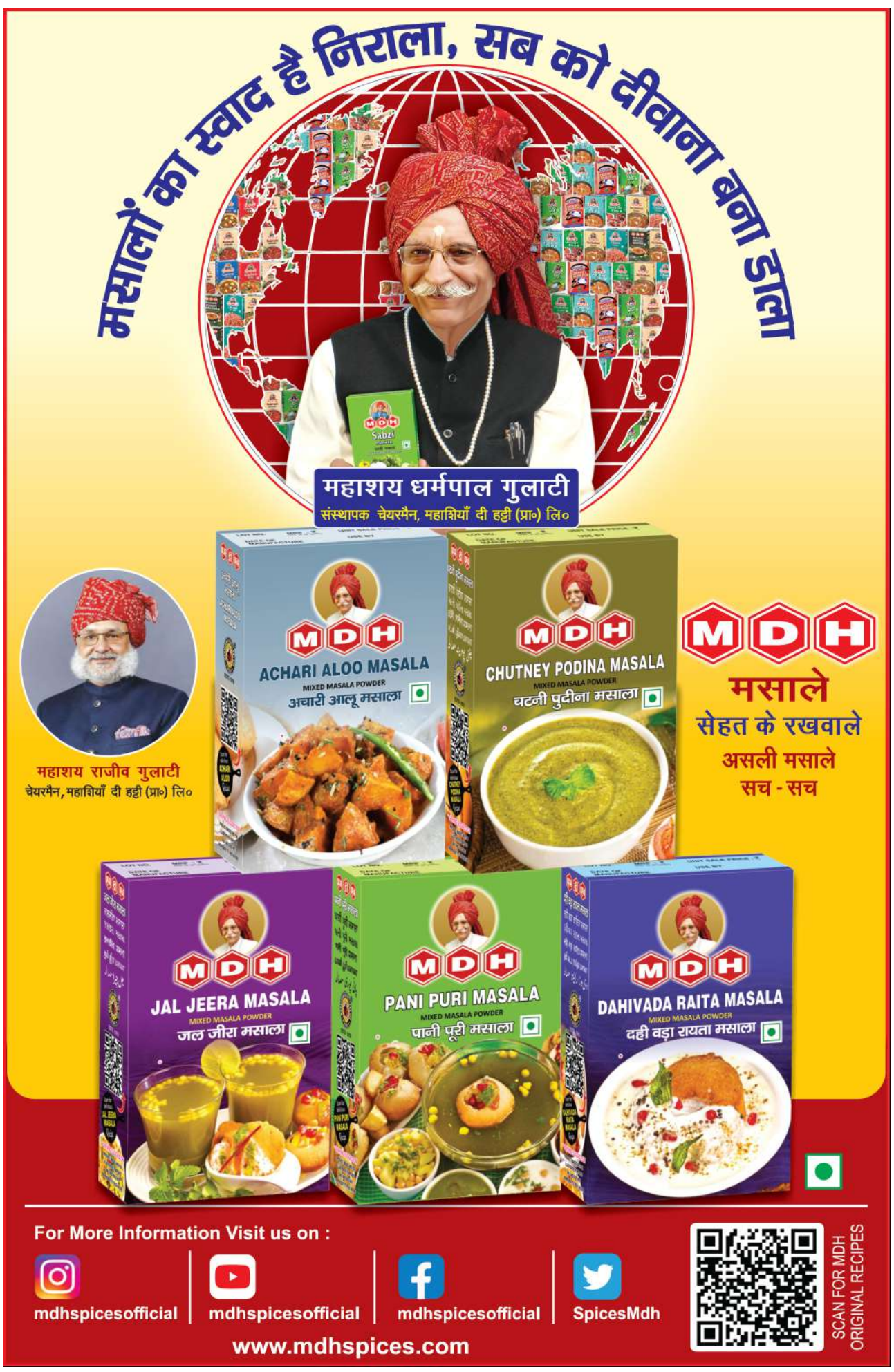

सम्पादकीय

श्रेष्ठ गुण, कर्म, स्वभाव से युक्त जीवन : मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम

चैत्र शुक्ल नवमी आर्यों व हिन्दुओं का ही नहीं अपितु संसारस्थ सभी विवेकशील लोगों के लिए आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जन्म दिवस पर्व है। इस पर्व को श्री रामचन्द्र जी के भक्त अपनी अपनी तरह से सर्वत्र मनाते हैं। हम वैदिक धर्मी आर्य हैं और मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी वैदिक धर्म के सभी सिद्धान्तों को अपने जीवन में धारण किए हुए एक महान पुरुष हैं। उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान वेदों द्वारा स्थापित सभी मर्यादाओं का पालन किया और यह सिद्ध किया कि वैदिक शिक्षायें केवल पुस्तकीय ज्ञान न होकर वह पूरी की पूरी जीवन में धारण व पालन करने योग्य है। श्री राम का जन्म दिवस पर्व चैत्र शुक्ल पक्ष की नवमी हमें यह अवसर देता है कि हम उनके जीवन के गुणों का चिन्तन व मनन करें और देखें की हममें उनकी तुलना में क्या कमियां हैं। हम यहां यह भी वर्णन कर दें कि श्री रामचन्द्र जी ईश्वर के अवतार नहीं अपितु ईश्वर के सच्चे भक्त, उपासक, आज्ञापालक, वैदिक गुणों के श्रेष्ठ आदर्श व उदाहरण तथा विश्व के सभी युवाओं व वृद्धों के सबसे बड़े रोल माडल वा आदर्श महापुरुष हैं। श्री रामचन्द्र जी का जीवन आदर्श जीवन था। आर्य विद्वान पं. भवानी प्रसाद जी ने उनके विषय में लिखा है कि ह्यइस समय भारत के श्रृंखलाबद्ध इतिहास की अप्राप्यता में यदि भारतीय अपना मस्तक समुन्नत जातियों के समक्ष ऊंचा उठा कर चल सकते हैं, तो महात्मा राम के आदर्श चरित की विद्यमानता है। यदि प्राचीनतम ऐतिहासिक जाति होने का गौरव उनको प्राप्त है तो सूर्य कुल-कमल-दिवाकर राम की अनुकरणीय पावनी जीवनी की प्रस्तुति से। यदि भारताभिजनों को धर्मिक सत्यवक्ता, सत्यसन्ध, सभ्य और दृढ़व्रत होने का अभिमान है तो प्राचीन भारत के धर्म प्राण तथा गौरवसर्वस्व श्री राम के पवित्र चरित्र की विराजमानता से। पं. भवानी दयाल जी आगे लिखते हैं ह्यदि पूर्ण परिश्रम से संसार के समस्त स्मरणीय जनों की जीवनियां एकत्र की जायें तो हम को उन में से किसी एक जीवनी में वह सर्वगुणराशि एकत्र न मिल सकेगी, जिस से सर्वगुणागार श्रीराम का जीवन भरपूर है। आज हमारे पास भगवान रामचन्द्र का ही एक ऐसा आदर्श चरित्र उपस्थित है जो अन्य महात्माओं के बचे बचाये उपलब्ध चरित्रों से सर्वश्रेष्ठ और सब से बढ़कर शिक्षाप्रद है। वस्तुतः श्रीराम का जीवन सर्वमर्यादाओं का ऐसा उत्तम आदर्श है कि मर्यादा पुरुषोत्तम की उपाधि केवल उन के लिए रूढ़ हो गई है। जब किसी को सुराज्य का उदाहरण देना होता है तो रामराज्य का प्रयोग किया जाता है। इसके बाद पंडित जी ने श्री रामचन्द्र जी के गुण, कर्म व स्वभाव का वर्णन करते हुए जो लिखा है वह स्मरण व कण्ठ करने योग्य है। इसके अनुरूप ही उनके सभी भक्तों व अनुयायियों का जीवन होना चाहिये।

पण्डित जी लिखते हैं केवल लोक मर्यादा की अक्षुण्ण स्थिति बनाये रखने के लिए निष्काम कर्म करते रहने के वैदिक धर्म के सिद्धान्त का पूर्ण रूप से पालन करके प्रातःस्मरणीय श्रीरामचन्द्र ने ही दिखलाया था। ह्यआहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च। न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकारविभ्रमः।। (बाल्मीकि रामयण)ह्व इस श्लोक का अर्थ है कि राज्य अभिषेक के लिए बुलाये हुए और वन के लिए विदा किए हुए रामचन्द्र के मुख के आकार मे मैंने (ऋषि बाल्मीकि ने) कुछ भी अन्तर नहीं देखा। आदिकवि वाल्मीकि का यह शब्द-चित्र निष्काम कर्मवीर श्री रामचन्द्र जी का ही यथार्थ चित्र था। वास्तव में वह स्वकुलदीपक, मातृमोदवर्द्धक तथा पितृनिर्देशपालक पुत्र, एकपत्नीव्रतनिरत, प्राणप्रियाभार्यासखा, सुहृद्दुःखविमोचक मित्र, लोकसंग्राहक, प्रजापालक नरेश, सन्तानवत्सलपिता और संसार-मर्यादाव्यवथापक, परोपकारक, पुरुषरत्न का एकत्र एकीकृत सन्निवेश, सूर्यवंश प्रभाकर, कौसल्योल्लासकारक, दशरथानन्दवर्धक, जानकी जीवन, सुग्रीवसुहृद्, अखिलार्यनिषेवितपादपद्म, साकेताधीश्वर महाराजाधिराज, भगवान रामचन्द्र में ही पाया जाता है।ह्व श्री रामचन्द्र जी के यह गुण उनके प्रत्येक भक्त में होने चाहियें। यदि ऐसा पाया जाता है सभी कोई व्यक्ति श्रीरामभक्त कहला सकता है, अन्यथा नहीं। हमें तो यह कहने में कुछ सन्देह नहीं है कि यह समस्त गुण तो क्या ऐसे कुछ थोड़े गुण भी भगवान राम के अनुयायी हम लोगों में नहीं हैं। श्री रामचन्द्र जी त्रेतायुग में जन्में थे। त्रेतायुग की अवधि 12.96 लाख वर्ष और द्वापर की 8.64 लाख वर्ष होती है। इस दृष्टि से श्री रामचन्द्र जी का काल न्यूनतम 8.64 वर्ष से लेकर 21.60 लाख वर्ष के बीच होता है। इतने वर्ष पूर्व ही महर्षि बाल्मीकि जी हुए थे। वह ऋषियों के समान एक एक ऋषि और योगी थे और अपने ऋषित्व व योगबल से अतीत की बातों को प्रत्यक्ष करने की क्षमता रखते थे। संस्कृत में काव्य रचना का गुण उन्हें परमात्मा से प्राप्त हुआ था और श्री रामचन्द्र जी के जीवन पर रामायण की रचना की प्रेरणा भी ईश्वर से ही मिली थी। एक समय ऐसा आया कि नारद जी महर्षि बाल्मीकि जी के आश्रम में पहुंच गये और दोनों के मध्य वातार्लाप हुआ। इस अवसर का लाभ उठाकर महर्षि बाल्मीकि जी ने नारद जी से प्रश्न किये। उन्होंने उनसे प्रश्न किया कि इस समय संसार में गुणवान, पराक्रमी, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्यवक्ता और अपने व्रत में दृढ़ पुरुष कौन है? सदाचार से युक्त सब प्राणियों के कल्याण में तत्पर, विद्वान, सामर्थ्यशाली और देखने में सब से सुन्दर पुरुष कौन है? जो तपस्वी तो हो परन्तु क्रोधी न हो। तेजस्वी तो हो परन्तु ईष्यार्लु न हो और इन सब दया, अक्रोध आदि गुणों से युक्त होते हुए भी जब रोष आ जाये तो जिस के सामने देवजन भी कांपने लगें। हे तपेश्वर ! यदि आप किसी ऐसे महापुरुष को जानते हों तो उस का वृत्तान्त मुझ को बताइये क्योंकि आप त्रिलोक भ्रमण करने वाले हैं। बाल्मीकि जी के प्रश्नों का उत्तर देते हुए नारद जी ने कहा कि बाल्मीकि जी ! अयोध्या में इक्षवाकु वंश मे उत्पन्न हुआ राम नाम से जो प्रसिद्ध राजा राज करता है, वह उन सब गुणों से युक्त है जिनका आपने उल्लेख किया है। नादर मुनि जी ने राम का तब तक का सम्पूर्ण जीवन चरित्र भी संक्षेप में बाल्मीकि जी को सुना व बता दिया। श्री रामचन्द्र जी सत्यवक्ता और कर्तव्यों के आदर्श पालक थे। बाल्मीकि रामायण से उनके इन व अन्य सभी गुणों पर व्यापक प्रकाश पड़ता है। अतः बाल्मीकि रामायण पढ़ने व मनन करने योग्य है। जब भरत उन्हें वन से लौटाने के लिए गये और मन्त्रियों तक ने उन्हें अयोध्या लौटने की प्रेरणा की तब भी उन्होंने कर्तव्य को सर्वोपरि रखा। उन्होंने कहा अपने को वीर कहलाने वाला व्यक्ति कुलीन है या अकुलीन है, पवित्र है या अपवित्र, यह उसके चरित्र से ही विदित हो सकता है। यदि मैं धर्म का ढोंग करूं परन्तु आचरण करूं धर्म के विरूद्ध तो कैसे समझदार पुरुष मेरा मान करेगें? उस दशा में मैं कुल का कलंक ही माना जाऊंगा। आईये, अब रामचन्द्र जी की कृतज्ञता का उदाहरण भी देखते हैं। सुग्रीव और विभीषण ने राम की संकट के समय सहायता की थी। राम ने उन दोनों का संकट निवारण करके उन दोनों को ही राज्य दिलाकर उस सहायता का जो भव्य बदला दिया, वह राम की कृतज्ञता की भावना का स्पष्ट उदाहरण है। श्री रामचन्द्र जी ने अपनी सत्यवादिता से सत्य को गौरवान्वित किया था। राम चन्द्र जी सत्य के जीते जागते मूर्तरूप थे। यदि राम कुछ हैं तो वह सत्य को धारण व उसका पालन करने के कारण ही हैं। रामचन्द्र जी तो इसके आगे भी कहते हैं ह्यन आज तक मैंने कभी झूठ बोला है और न आगे कभी बोलूंगा।ह्व वस्तुतः सत्य और उस के पालन में दृढ़ता राम के भव्य जीवन के दो प्रधान तत्व है। श्री रामचन्द्र जी का जीवन विश्व के महापुरुषों के जीवन साहित्य में सर्वोत्कृष्ट एवं सर्वोत्तम है। उनका जीवन आदर्श जीवन है जिसका अध्ययन, चिन्तन, मनन व आचरण जीवन को सार्थक करने में समर्थ है। यह भी उल्लेख कर दें कि बाल्मीकि रामायण श्रीरामचन्द्र जी की अवतार लेकर लीला करने की कहानी व काल्पनिक घटनाओं का ग्रन्थ नहीं है अपितु यह सत्य इतिहास का ग्रन्थ है। यह भी तथ्य है कि बाल्मीकि रामायण में मध्यकाल में स्वार्थी व साम्प्रदायिक लोगों ने प्रक्षेप कर इसके स्वरूप को विकृत किया है। रामचन्द्र जी के कार्यों को लीला की उपमा देकर हमारे पौराणिक भाई श्रीरामचन्द्र जी के महान कार्यों का अवमूल्यन करते हैं। यह भी हमारे समाज के पतन का एक कारण है।

अतिथि सम्पादकीय : मनमोहर सिंह आर्य, देहरादून

मानव जीवन का लक्ष्य है मोक्ष

मनुष्य जीवन का लक्ष्य मोक्ष है। इसी लक्ष्य को प्राप्त करना महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन का ध्येय था। मुक्ति के इच्छुक ऋषिवर पूर्व जन्मों से भी अपने इसी ध्येय के अनुकूल संस्कारों का कोष लेकर आये थे और उन्होंने वर्त्तमान जन्म में भी अपने उन्हीं संस्कारों के अनुसार तीव्र गति से अपने ध्येय की ओर बढ़ना प्रारम्भ कर दिया था । अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने वाला महामानव अपने निश्चित किये गये लक्ष्य के विपरीत संसार रूप सागर में उठती हुई लहरों के थपेड़ों से कभी विचलित नहीं होता है क्योंकि उसने तप के द्वारा उस शक्ति का संग्रह कर लिया होता है कि जो शक्ति संसार सम्बन्धी इन विपरीत तरंगों से, जो कि उसके लक्ष्य में बाधक हैं, उनसे टक्कर लेकर उन्हें प्रबल धक्के से दूर धकेलती हुई इसे आगे बढ़ने का अवसर प्रदान कर सके।ऐसा मानव अपने स्वभाव की दिशा को तो पहले ही बदल चुका होता है, इसलिये उसके पास अपने लक्ष्य से भटकाने वाले किसी प्रतिकूल संस्कार का भी दूर दूर तक नामोनिशान नहीं होता है।वह अपने इस जीवन में भी लक्ष्य का निर्धारण प्रभु की कृपा से स्वयमेव कर लेता है क्योंकि उसके जीवन का लक्ष्यानुसारी निर्माण इस वर्त्तमान जीवन में ही आरम्भ नहीं हो रहा है अपितु उसके उज्ज्वल जीवन का निर्माण पहले से होकर आया है।

अहो! इसी कारण से फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी के दिवस ऋषिवर के जीवन में वह कैसी विचित्र घटना घटी कि उस दिन टंकारा के शिवमन्दिर के दृश्य ने जिसमें कि अचेतन प्रतिमाओं पर चढ़ाये गये पदार्थों को चूहे खा रहे थे, इस दृश्य ने उनके पूर्वजन्म की संस्कार -माला का चित्र, उस घटना से विस्मित होकर अन्तर्ध्यान होते ही उनके मन के चित्रपट पर अविकल खींच दिया।प्रभु की कृपा से व्यवस्थानुसार ऋषिवर के संस्कार जग गये, ध्येय सामने आ गया और तत्काल ही वर्त्तमान के कार्यक्रम का सूत्रपात हो गया। यह सूत्रपात क्या था? यह सूत्रपात एक साधारण विचारधारा का प्रकाशमात्र ही न था अपितु यह एक अवश्यम्भावी कार्यक्रम का उपक्रम था। इस कार्यक्रम का ध्येय था -प्रभुदर्शन, जो कर्त्तव्य के रूप में बनकर पूर्वजन्म से ही संस्कार के रूप में आया था। आदर्श महापुरुषों के जीवन की यह सबसे बड़ी विशेषता होती है कि वे ध्येय व उसको सिद्ध करने के कार्यक्रम का तत्काल ही निर्णय कर लेते हैं तथा तीव्र गति से उस कार्यक्रम का अनुष्ठान भी आरम्भ कर देते हैं । योगिराज स्वामी आत्मानन्द सरस्वती ने ऐसे महापुरुषों के लिये अथर्ववेद के एक मन्त्र का अर्थ इस प्रकार प्रस्तुत किया है -

यो वै ते विद्यादरणी याभ्यां निर्मथ्यते वसु।
स विद्वान् ज्येष्ठं मन्येत स विद्याद् ब्राह्मणं महत।।

जो मनुष्य उन दो अरणियों को(ज्ञान और तप को) जानता है,जिनके मन्थन से सबको बसाने वाले भगवान का मन्थन किया जाता है; वह ही विद्वान् उस ज्येष्ठ ब्रह्म का मानना करता है और वह ही उस सबसे महान् ब्रह्म तत्त्व को जानता है।"

अथर्ववेद में वर्णित ज्ञान व तप नामक ये दोनों अरणियां महर्षि दयानन्द सरस्वती के हाथ में थीं।ज्ञान तो उन्हें अपनी पूर्व सञ्चित सामग्री के रूप में प्राप्त हो गया था, इसमें जो कुछ विस्मरण का आवरण था उसे प्रभु की कृपा ने उस व्रत के दिन अन्तर्ध्यान होते ही हटा दिया। अहो! अब उनके सामने अपने संस्कार रूप ज्ञान के प्रकट होते ही, इससे आगे का उनके जीवन का सारा ही कार्यक्रम एक कठोर उग्रतप की विचित्र झांकी है।उनके जीवन -चरित्र में इस विचित्र झांकी के दर्शन होते हैं।इन ज्ञान व तप के द्वारा जिस आत्मा में ब्रह्म की शक्तियों का विकास हो जाता है,वह उसी ब्रह्म से प्रेरित होकर लोक कल्याण के कार्यों में लग जाता है।ब्रह्म प्राप्ति होने के अनन्तर ऋषि के जीवन का सारा ही दृश्य ऐसा है। इस दृश्य से अभिभूत आर्य जन फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी के दिन ऋषिबोध पर्व मनाते हैं। आज के दिन एक घटना से विस्मित होकर अन्तर्हित हुए महर्षि को अपने अन्तःकरण में विराजमान, परन्तु कुछ ओझल ईश्वर प्राप्ति की प्रबल अभिलाषा का बोध हुआ था और उस दिन ही हम भी किसी अन्य विशेष घटना से नहीं, अपितु बोध की ही इस विचित्र घटना से बोध प्राप्त करना चाहते हैं।ऐसा करके हम उनके आदर्श जीवन के अनुगामी बनकर अभ्युदय व मोक्ष प्राप्त करने के अधिकारी बन सकते हैं।।

आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी
९४१२११७९६५

बंगभूमि बांग्लादेश से एक पाती

आर्य समाज मंदिर,
दयागंज , ढाका बांग्लादेश
4/3/2023 शनिवार

इंडिगो के वायुयान से 20 फरवरी को नई दिल्ली से रवाना होकर दोपहर 3-45 पर ढाका पहुँचे। ये हमारी पन्द्रहवी विदेश मात्रा है। इसके पूर्व भारत के 29 प्रान्तों और विश्व के 6 महाद्वीपों के लगभग 15 देशों में वैदिक धर्म का प्रचार हम कर चुके है।

2 मार्च 2013 को सायं 5.30 बजे भारत के राजदूत श्री प्रणय वर्मा जी (भारतीय उच्चायुक्त) से एक शिष्टमंडल के साथ जाकर मुलाकात की। अंग्रेजी, हिन्दी, बांग्ला भाषा का आर्य वैदिक साहित्य भेट किया। आर्य समाज के आनुषंगिक संगठन अग्निवीर बांग्लादेश के बारे में जानकारी दी। स्थानीय आर्य युवकों के प्रति सहयोग पूर्ण स्नेह बनाये रखने का आग्रह किया। अंग्रेजो ने हमारे तत्कालीन नेता ओ की स्वीकृति से 1947 में धर्म के नाम पर बंटवारे में भारत भूमि को दो भागों में बांट कर पाकिस्तान से मिला दिया । 1955 में इस भाग को पाक नेताओं ने पूर्वी पाकिस्तान का नाम देकर सौतेला व दमनीय व्यवहार प्रारंभ कर दिया। तो मुजीबुर्रहमान के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन मुखर हो उठा` 1970 में पाक सेना ने 30 लाख बंगाली लोगों का कत्लेआम किया 2 लाख महिलाओं का शीलभंग हुआ इनमें हिन्दू ही ज्यादा थे` 10 लाख शरणार्थी भारत पहुंचे तब भारत को हस्तक्षेप करना पड़ा। 3 दिसंबर 1972 को युद्ध प्रारंभ हो गया । अंततः 93000 पाकिस्तानी सेना का भारतीय सेना के समक्ष ऐतिहासिक आत्मसमर्पण हुआ। उदारतापूर्वक भारत में इन को अलग अलग कैंपों रखा गया अन्यथा बंग जनता इन को जीवित ही न छोड़ती।भारत ने इस आकस्मिक युद्ध में विजय प्राप्त की । और 16 दिसंबर 1971 विश्व के क्षितिज में नये देश बांग्लादेश का उदय हुआ केवल साढ़े तीन साल के अंदर ही आतंकियो ने देश के जनक व प्रथम राष्ट्रपति मुजीबुर रहमान को सपरिवार गोली मार कर पूरे परिवार को समाप्त कर दिया उनकी 2 बेटियां जर्मनी गई थी अन्यथा अनर्थ हो जाता। 15 साल के अल्प काल में 8 राष्ट्रपति बने वर्षो तक अस्थिरता रही अब उनकी बेटी शेख हसीना जी देश की प्रधानमंत्री है। पश्चिम बंगाल मेघालय मिजोरम त्रिपुरा व आसाम इन पांच राज्यों के साथ, वर्मा देश व बंगाल की खाड़ी का स्पर्श बांग्लादेश की सीमा करती है। मध्य प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का लगभग आधा 148460 वर्ग किलोमीटर का यह छोटा सा देश है` इस की जनसंख्या 18 करोड़ है जिसमें मुस्लिम 90% हिंदू 8% लगभग डेढ़ करोड़ और 1% मे ईसाई व बौद्ध लोग हैं। 25000 लोगआर्यसमाज से प्रभावित है। आर्यसमाज के सारे देश में कुल 45 मंदिर व 150 शाखाएं हैं। जाकिर नायक व ब्राह्मण से मुस्लिम बने ब्रदर राहुल इन दोनो ने सैकड़ों हिन्दूओ को अपने कुतकों से मुस्लिम बनाया। भारत के अग्निवीर संगठन ने जब सोशल मीडिया से इनको यथोचित उत्तर दिया तो डॉक्टर निलय जी आर्य समाज से प्रभावित हुए और उन्होंने 2012 मे यहाँ अग्निवीर बांग्लादेश की स्थापना की । जिसमे 200 डॉक्टर 150 इंजीनियर, 50 पुलिस अधिकारी, सी.ए., प्रोफेसर व विश्व विद्यालय के सैंकडों छात्र छात्राये है।इन दो बेब साइड के माध्यम में सैकड़ों हिन्दुओं को यह संगठन बचा चुका है। जाकिर नाइक व ब्रदर राहुल की बोलती इन अग्निवीरो ने बंद कर दी है। बड़ी संख्या में आर्य साहित्य का ये अनुवाद कर चुके हैं। इनमें 30 पुस्तकें प्रकाशित भी हो चुकी है। बांग्लादेश में इन्होने हमारे 8-10 कार्यक्रम रखे थे जिसमे 226 उच्च शिक्षित युवक युवतियों के यज्ञोपवीत व वेदारंभ संस्कार कराने का सौभाग्य हमे प्राप्त हुआ। ाव जिहाद, हिन्दू मंदिरों को तोड़ना, देवी देवताओं पर अश्लील कमेंट अत्रत्य मौलवी करते रहते हैं। देश में 8 डिवीजन व 64 जिले हैं व्यापार में मुस्लिम पार्टनर रखना मजबूरी है अन्यथा सरकारी समस्याये आती है। अधिकतर मंदिरों में बलि दी जाती है प्रजा 99% मांसाहारी हैं । ढाकेश्वरी मंदिर, रमना काली मंदिर रुक्मिणीकांत ज्यू मंदिर, चंद्रनाथ मंदिर, अलग अलग नगरों में इस्कान के बहुत सारे मंदिर, म्यूजियम राजमहल आदि पर्यटन व दर्शनीय स्थल हैं। यहाँ की मुद्रा टका है जो भारत 100 में 120 के बराबर है। जो युवतियां हिन्दू युवको से विवाह कर घर वापसी करना चाहती है इनकी शुद्धि आर्य अग्निवीर करते है। कोई स्थायी विद्वान मिले तो एक गुरुकुल बांग्लादेश में खोलना चाहते हैं।

"मंजिल बहुत अफसाने बहुत राह जिंदगी में इंतहान बहुत हैं।/
मत करो गिला उसका जो मिला नहीं, /
इस दुनिया में खुश रहने के बहाने बहुत हैं।"

गृह मंदिर व आर्य समाज मंदिर में सभी को नमस्ते कहें ।

आपका अपना ही

आचार्य आनंद पुरुषार्थी
मो. 7987372305

प्रथम पृष्ठ से आगे : महर्षि की २०० वीं जयंती श्रृंखला पर प्रधानमंत्री का ऐतिहासिक भाषण ...

प्रधानमंत्री श्री मोदी को सम्मान पत्र भेंट करते गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत_ केसरी।

प्रधानमंत्री के स्वागत का भाव पूर्ण दृश्य_ केसरी।

आर्य वीर दल की मशाल थामे प्रधानमंत्री जी। साथ में है राज्यपाल आचार्य देवव्रत व डीएवी के अध्यक्ष श्री पूनम सूरी_ केसरी।

महर्षि दयानंद का मार्ग करता है आशा का संचार

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि 21 वीं सदी में आज जब विश्व अनेक विवादों में फंसा है, हिंसा और अस्थिरता में घिरा हुआ है, तब महर्षि दयानंद सरस्वती जी का दिखाया मार्ग करोड़ों लोगों में आशा का संचार करता है। स्वामी दयानंद सरस्वती ने आज से डेढ़ सौ वर्ष पूर्व विश्व को श्रेष्ठ बनाने, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने और पर्यावरण व प्रकृति को संभाल कर रखने का आह्वान किया था। आजादी के अमृत-काल में देश उन सुधारों का साक्षी बन रहा है, जो स्वामी दयानंद की प्राथमिकताओं में थीं।

बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है महर्षि का आवाहन" वेदों की ओर लौटो"

आज जीवन जिस प्रकार दौड़ रहा है, मृत्यु के 10 साल के बाद भी जिंदा रहना असंभव होता है। ऐसे में 200 साल के बावजूद भी आज महर्षि जी हमारे बीच में है, और इसलिए आज जब भारत आजादी का अमृतकाल मना रहा है, तो महर्षि दयानंद जी की 200 वीं जन्म जयंती एक पुण्य प्रेरणा लेकर आई है। महर्षि जी ने जो मंत्र तब दिए थे, समाज के लिए जो सपने देखे थे, देश आज उन पर पूरे विश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है। स्वामी जी ने तब आह्वान किया था, "वेदों की ओर लौटो"। आज देश अत्यंत स्वाभिमान के साथ अपनी विरासत पर गर्व का आह्वान कर रहा है। आज देश पूरे आत्मविश्वास के साथ रहा है कि हम देश में आधुनिकता लाने के साथ ही, अपनी परंपराओं को भी समृद्ध करेंगे। विरासत भी, विकास भी, इसी पटरी पर, देश नई ऊंचाइयों के लिए दौड़ पड़ा है।

महर्षि दयानन्द भारतीय परंपरा को दूषित करने के प्रयास के दौर में हैं संजीवनी

पीएम मोदी ने स्वामी दयानंद की भेदभाव दूर करने और लोगों को भारत की प्राचीन संस्कृति व परंपरा से जोड़ने के प्रयासों का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि गुलामी के दौर में अध्यात्म और आस्था आडंबर का रूप धारण कर लेती हैं। उनका प्रयास उस दौर में था, जब विदेशियों की ओर से भारतीय परंपरा के खिलाफ ह्यनरेटिवह्ल गढ़े जा रहे थे। स्वामी दयानंद परंपरा को दूषित करने के प्रयास के उस दौर में ह्यसंजीवनीह्ल बूटी बनकर आए थे।

कर्तव्य ही सबसे पहला मानव धर्म

प्रधानमंत्री जी ने भारी जनसमूह के बीच अपने अनूठे अंदाज में कहा कि आज देश पूरे गर्व के साथ ह्यअपनी विरासत पर गर्वह्ल का आह्वान कर रहा है। आज देश पूरे आत्मविश्वास के साथ कह रहा है कि हम देश में आधुनिकता लाने के साथ ही अपनी परंपराओं को भी समृद्ध करेंगे। पीएम ने कहा कि पूजा-पाठ और रीति रिवाज से अलग भारत में धर्म का निहितार्थ बिल्कुल अलग रहा है। वेदों ने जिस जीवन पद्धति को परिभाषित किया है, उसमें कर्तव्य ही सबसे पहला मानव धर्म है। कर्तव्यों का भान करते हुए हमारे ऋषियों और मुनियों ने राष्ट्र और समाज के कई आयामों की जिम्मेदारी उठाई और भारतीय संतों ने भाषा, योग और दर्शन जैसे विभिन्न विषयों पर अपना योगदान दिया। आमतौर पर दुनिया में जब धर्म की बात होती है तो उसका दायरा केवल पूजा पाठ, आस्था और उपासना, उसकी पद्धतियां, उसी तक सीमित माना जाता है। लेकिन भारत के संदर्भ में धर्म के अर्थ और उसके निहितार्थ एकदम अलग है। वेदों ने धर्म को एक संपूर्ण जीवन पद्धति के रूप में परिभाषित किया है। हमारे यहां धर्म का पहला कर्तव्य समझा जाता है, पितृ धर्म, मातृ धर्म, पुत्र धर्म, देश धर्म, काल धर्म, ये हमारी कल्पना है। इसलिए हमारे संतो और ऋषियों की भूमिका भी केवल पूजा और उपासना तक सीमित नहीं रही, उन्होंने राष्ट्र और समाज के हर आयाम की जिम्मेदारी संभाली।

अनेक आचार्यों ने समृद्धि किया है हमारी विरासत को

हमारे यहां भाषा और व्याकरण के क्षेत्र को पाणिनि जैसे आचार्यों ने समृद्ध किया। योग के क्षेत्र को पतंजलि जैसे महर्षिओं ने विस्तार दिया। आप दर्शन में जाएंगे तो पाएंगे कि कपिल जैसे आचार्यों ने बौद्धिकता को नई प्रेरणा दी। नीति और राजनीति में महात्मा विदुर से लेकर भर्तहरि और आचार्य चाणक्य तक कई ऋषि भारत के विचारों को परिभाषित करते रहे हैं। हम हम गणित की बात करेंगे तो भारत का नेतृत्व आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, और भास्कर जैसे महानतम गणितज्ञों ने किया, उनकी प्रतिष्ठा से जरा भी कम नहीं ही। विज्ञान के क्षेत्र में तो कणाद और वराहमिहिर और चरक से और सुश्रुत तक अनगिनत नाम है। स्वामी दयानंद जी को देखते हैं, तो हमे पता चलता है कि प्राचीन परंपरा को पुनर्जीवित करने में उनकी कितनी बडी भूमिका रही है, और उनके भीतर आत्मविश्वास कितना गजब का होगा।

भारतीय परिवेश में ढली शिक्षा व्यवस्था की वकालत की

उन्होंने कहा कि स्वामी दयानंद जी ने भी आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ गुरुकुलों के जरिए भारतीय परिवेश में ढली शिक्षा व्यवस्था की वकालत की थी। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के जरिए देश ने अब इसकी भी बुनियाद मजबूत की है। उन्होंने कहा कि भारत आज विश्व के लिए एक पथ प्रदर्शक की भूमिका निभा रहा है। हमने प्रकृति से समन्वय के विजन को अपनाते हुए एक ग्लोबल मिशन ह्यलाइफह्ल जिसका अर्थ है ह्यलाइफस्टाइल फॉर इन्वार्मेंटह्ल की भी शुरूआत की है। प्रधानमंत्री ने आर्य समाज से आग्रह किया कि वह गांव-गांव तक प्राकृतिक खेती ले जाने का संकल्प लें। साथ ही उसे अपनाने के लिए लोगों को प्रेरित करें। ज्ञातव्य है कि युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती का जन्म 12 फरवरी 1824 को गुजरात प्रांत के मोरबी स्थित टंकारा ग्राम में हुआ था। वे एक महान समाज सुधारक थे। उन्होंने 1875 में तत्कालीन सामाजिक असमानताओं से निपटने के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्य समाज ने सामाजिक सुधारों और शिक्षा पर जोर देकर देश की सांस्कृतिक एवं सामाजिक जागृति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आर्य जगत की संस्थाएं कर रही हैं अभूतपूर्व कार्य_

स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने अपने जीवन काल में केवल एक मार्ग ही नहीं बनाया, उन्होंने अनेक अलग-अलग संस्थाओं संस्थागत व्यवस्थाओं का भी सृजन किया और मैं कहूंगा कि ऋषि जी अपने जीवन काल में क्रांतिकारी विचारों को लेकर चले, उसको जीए, लोगों को जीने के लिए प्रेरित किया, लेकिन उन्होंने हर विचारों को व्यवस्था के साथ जोड़ा, और संस्थानों को जन्म दिया। यह संस्थाएं दशकों से अलग-अलग क्षेत्रों में कई बड़े सकारात्मक काम कर रही हैं। परोपकारिणी सभा की स्थापना तो महर्षि जी ने खुद की थी। यह संस्था आज भी प्रकाशन और गुरुकुलों के माध्यम से वैदिक परंपरा को आगे बढ़ाने का काम कर रही है। कुरुक्षेत्र गुरुकुल हो, स्वामी श्रद्धानंद ट्रस्ट हो, या महर्षि दयानंद सरस्वती ट्रस्ट, इन संस्थानों ने राष्ट्र के लिए समर्पित कितने ही युवाओं को गढ़ा है। इसी तरह स्वामी दयानंद जी से प्रेरित अनेक संस्थाएं गरीब बच्चों के लिए, उनके भविष्य के लिए, सेवा भाव से काम कर रही हैं। और यह हमारे संस्कार हैं हमारी परंपरा है।

परंपरागत स्वागत से प्रधानमंत्री जी हुए भाव विभोर

दिल्ली के इंदिरा गांधी इनडोर स्टेडियम में खचाखच भरे कार्यक्रम स्थल पर सर्वप्रथम माननीय प्रधानमंत्री जी का आर्य परिवारों के बच्चों ने स्वागत किया। आर्य समाज के सेवा कार्यों की प्रदर्शनी को देखकर प्रधानमंत्री जी ने जो संतोष जताते हुए प्रशंसा व्यक्त की, यह आर्य समाज के लिए अत्यंत प्रेरणादाई है। आर्य समाज के यज्ञ में श्रद्धा पूर्वक आहुति देना भी अपने आप में गौरव की बात है। इससे भी बड़ी बात प्रधानमंत्री जी का सारगर्भित प्रेरक उद्बोधन, जिसमें उन्होंने महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन को सरल सहज शब्दों में प्रस्तुत किया और आर्य समाज के सेवा कार्यों की भूरि भूरि प्रशंसा भी की। प्रधानमंत्री जी ने अपने लंबे उद्बोधन में महर्षि दयानंद सरस्वती जी के उपकारों को न केवल याद ही किया, बल्कि उनसे प्रेरणा लेकर आगे बढ़ने पर भी बल दिया। आर्य समाज के सेवा कार्य तथा महर्षि दयानंद सरस्वती से प्रेरित देश भक्तों की महिमा का प्रधानमन्त्री जी द्वारा किया गया उल्लेख आज संपूर्ण विश्व पटल पर छाया हुआ है। प्रधानमंत्री जी ने आर्य समाज से कुछ अपेक्षाएं भी की हैं। उन्होंने कर्तव्य यज्ञ की प्रेरणा देते हुए हमें जगाने का प्रयास किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि महर्षि के सिद्धांतों, उनकी शिक्षाओं, आर्य समाज की मान्यताओं और परंपराओं का हम सबको लगातार प्रचार-प्रसार और विस्तार करने का संकल्प लेना चाहिए। यह हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य यज्ञ है।

भारत सरकार का संस्कृति मंत्रालय भी करेगा आर्य समाज को सहयोग

प्रधानमंत्री जी ने अपनी विशिष्ट व्याख्यान शैली में आर्य समाज से यह भी आवाहन किया कि आने वाले समय में जहां एक तरफ महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200 वीं जयंती है, वहीं आर्य समाज का स्थापना दिवस भी है, दो वर्षीय आयोजन आगामी वर्ष 2024-25 में तो चलेंगे ही, साथ ही, वर्ष 2026 में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान की शताब्दी भी है। ये तीनों अवसर त्रिवेणी के समान हैं । इन कार्यक्रमों को आर्य समाज विश्व स्तर पर आयोजित करे, जिसमें भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय का भी सहयोग व मार्ग दर्शन आर्य समाज के साथ रहेगा।

प्रधानमंत्री ने की "जीवन प्रभात, गांधीधाम" की मुक्त कंठ से सराहना

मुझे याद है अभी हम जब टीवी पर तुर्कीय के भूकंप के दृश्य देते हैं, तो बेचैन हो जाते हैं, पीड़ा होती है। मुझे याद है 2001 में जब गुजरात में भूकंप आया था पिछली शताब्दी का भयंकर भूकंप था उस समय गांधीधाम के जीवन प्रभात ट्रस्ट के सामाजिक कार्य और राहत बचाव में उसकी भूमिका को तो मैंने खुद ने देखा है। सब महर्षि जी की प्रेरणा से काम करते थे। जो बीज स्वामी जी ने रोपा था, आज विशाल वटवृक्ष के रूप में आज पूरी मानवता को छाया दे रहा है। आजादी के अमृत काल में आज देश उन सुधारों का साक्षी बन रहा है जो स्वामी दयानंद जी की प्राथमिकताओं में था। आज हम देश में बिना भेदभाव के नीतियों और प्रयासों को आगे बढ़ते देख रहे हैं, जो गरीब है उसकी सेवा आज देश के लिए सबसे पहला यज्ञ है, वंचितों को वरीयता इस मंत्र को लेकर हर गरीब के लिए मकान, उसका सम्मान, हर व्यक्ति के लिए चिकित्सा, बेहतर सुविधा सबके लिए पोषण, सबके लिए अवसर, सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सब का प्रयास, यह मंत्र देश के लिए एक संकल्प बन गया है। महिला सशक्तिकरण की दिशा में देश आज तेज कदमों से आगे बढ़ा है। आज देश की बेटियां बिना किसी पाबंदी के रक्षा_सुरक्षा से लेकर स्टार्टअप्स तक हर भूमिका में राष्ट्र निर्माण को गति दे रही है। अब बेटियां सियाचिन में तैनात हो रही है, और फाइटर प्लेन भी उड़ा रही हैं। हमारी सरकार ने सैनिक स्कूलों में बेटियों के एडमिशन, उस पर जो पाबंदी थी, उसे भी हटा दिया है। स्वामी दयानंद जी ने आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ गुरुकुलों के जरिए भारतीय परिवेश में ढली शिक्षा व्यवस्था की वकालत की थी। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के जरिए देश की बुनियाद मजबूत की है।

स्वामी दयानंद जी ने दिया हमें जीवन जीने का एक और मंत्र_

स्वामी जी का कहना था और बहुत ही मार्मिक है , स्वामी जी ने कहा था कि जो व्यक्ति सबसे कम ग्रहण करता है और सबसे अधिक योगदान देता है वही परिपक्व है। आप कल्पना कर सकते हैं कि कितनी सरलता से उन्होंने कितनी गंभीर बात कह दी थी। उनका यह जीवन मंत्र आज कितनी ही चुनौतियों का समाधान देता है। अब जैसे इसे पर्यावरण के संदर्भ में भी देखा जा सकता है। हमारे सबसे पुरातन माने जाने वाले वेदों में कितने ही सूत्र प्रकृति और पर्यावरण को समर्पित है। स्वामी जी ने वेदों के ज्ञान को गहराई से समझा था। उनके सार्वभौमिक संदेशों को उन्होंने अपने कालखंड में विस्तार दिया। महर्षि जी वेदों के शिष्य थे और ज्ञान मार्ग के संत थे। आज आर्य समाज भारत के प्राचीन जीवन दर्शन को विश्व के सामने रखता है। निश्चय ही देश के महत्वपूर्ण अभियानों में आर्य समाज एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। आप हमारे प्राचीन दर्शन के साथ आधुनिक और कर्तव्यों से जन-जन को जोड़ने की जिम्मेदारी आसानी से उठा सकते हैं। और हम तो जानते हैं हम तो यज्ञ संस्कृति के लोग हैं और हम यज्ञ में आहूति में जो सर्वश्रेष्ठ हैं उसी को देते हैं।

शेष समाचार पृष्ठ 4 पर

गुरुकुल की ब्रह्मचारिणीयां प्रधानमंत्री जी का स्वागत करती हुई केसरी।

अस्पृश्यता के विरुद्ध महर्षि दयानंद की घोषणा सबसे बड़ी देन

महात्मा गांधी जी ने कहा था कि हमारे समाज को स्वामी दयानंद जी की बहुत सारी देन है, लेकिन उनमें अस्पृश्यता के विरुद्ध घोषणा सबसे बड़ी देन है। महिलाओं को लेकर भी समाज में जो रूढ़ियां पनप गई थी, महर्षि दयानंद जी उनके खिलाफ भी एक तार्किक और प्रभावी आवाज बन करके उभरे। महर्षि जी ने महिलाओं के खिलाफ भेदभाव का खंडन किया, महिला शिक्षा का अभियान शुरू किया। और यह बातें डेढ़ सौ पोने दो सौ साल पहले की है। आज भी कई समाज ऐसे हैं, जहां बेटियों को शिक्षा और सम्मान से वंचित रहने के लिए मजबूर करते हैं। स्वामी दयानंद जी ने ये बिगुल तब फूंका था, जब पश्चिमी देशों में भी महिलाओं के लिए समान अधिकार दूर की बातथी। उस कालखंड में स्वामी दयानंद सरस्वती जी का पदार्पण पूरे युग की चुनौतियों के सामने उनका उठ करके खड़ा हो जाना, ये किसी भी रूप में सामान्य नहीं था। इसलिए राष्ट्र की यात्रा में उनकी जीवंत उपस्थिति आर्य समाज के डेढ़ सौ साल होते हो, महर्षि के 200 साल होते हो, और इतना बड़ा जन सागर सिर्फ यहां नहीं, दुनिया भर में आज इस समारोह में जुड़ा हुआ है। इससे बड़ी जीवन की ऊंचाई क्या हो सकती है?

भेदभाव तथा कुरीतियों को दूर करने के साथ ही किया महिला सशक्तिकरण की दिशा में प्रयास

संपूर्ण आर्य जगत से पधारे आर्यों के विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री जी ने कहा कि आज विवादों में फंसे विश्व में स्वामी दयानंद का बताया मार्ग करोड़ों लोगों में आशा का संचार कर रहा है। पीएम मोदी ने कहा कि वर्तमान समय में भी जिन विषयों को उठाना कठिन होता है, उस पर स्वामी दयानंद ने आज से भी 150-200 साल पूर्व कार्य किया है। उन्होंने भेदभाव और कुरीतियों को दूर करने तथा महिला सशक्तिकरण की दिशा में प्रयास किए। स्वामी दयानंद ने उस समय प्रयास किया जब यूरोप में महिला अधिकारों का विषय दूर की बात होती थी। उन्होंने कहा कि आज हम देश को बिना भेदभाव की नीतियों और प्रयासों के साथ आगे बढ़ते देख रहे हैं। गरीब, पिछड़ों और वंचितों की सेवा पहला यज्ञ है। वंचितों को वरीयता इस मंत्र को लेकर हर गरीब के लिए मकान, उसका सम्मान और हर व्यक्ति के लिए चिकित्सा उपलब्ध करवाई जा रही है।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की एक झलक_केसरी।

आगामी वर्ष में एक प्रकार से होगा त्रिवेणी का मिलन

शताब्दी समारोह श्रृंखला कार्यक्रमों का उद्घाटन करते प्रधानमंत्री_ केसरी।

"महर्षि दयानंद_जीवन केंद्रित" स्मृति चिन्ह भेंट करने का दृश्य_ केसरी।

पृष्ठ 3 से आगे

देशवासियों के जीवन और आहार को ठीक करना है। इसके लिए हमें नई पीढ़ी को भी जागरूक करना चाहिए। स्वतंत्रता के सर्वप्रथम उत्प्रेरक थे महर्षि दयानंद_ महर्षि दयानंद जी के व्यक्तित्व से भी हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। उन्होंने कितने ही स्वतंत्रता सेनानियों के भीतर राष्ट्रप्रेम की लौ जलाई थी। कहते हैं कि एक अंग्रेज अफसर उनसे मिलने आया, और उनसे कहा कि भारत में अंग्रेजी राज के सदैव बने रहने की प्रार्थना करें। स्वामी जी का निर्भीक जवाब था ,आंख में आंख मिलाकर अंग्रेज अफसर को कह दिया "स्वाधीनता मेरी आत्मा और भारतवर्ष की आवाज है, यही मुझे प्रिय है मैं विदेशी साम्राज्य के लिए कभी प्रार्थना नहीं कर सकता।" अनगिनत महापुरुष लोकमान्य तिलक, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, वीर सावरकर, लाला लाजपत राय, लाला हरदयाल, श्यामजी कृष्ण वर्मा, चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल जेसे लाखों_लाख और स्वतंत्रता सेनानी और क्रांतिकारी महर्षि जी से प्रेरित थे। दयानंद जी, दयानंद एंग्लो विद्यालय शुरू करने वाले महात्मा हंसराज जी हो, या गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करने वाले स्वामी स्वामी श्रद्धानंद जी हों, भाई परमानंद जी हो, स्वामी सहजानंद सरस्वती हो, ऐसे कितने ही देव तुल्य व्यक्तित्वो ने स्वामी दयानंद सरस्वती जी से ही प्रेरणा पाई थी। आर्य समाज के पास महर्षि दयानंद जी की उन सभी प्रेरणाओं की विरासत है। आपको वह सामर्थ्य विरासत में मिला है और इसलिए देश को भी आप सभी से बहुत बड़ी अपेक्षाएं हैं। आर्य समाज के एक-एक आर्यवीर से अपेक्षा है। मुझे विश्वास है कि आर्य समाज राष्ट्र और समाज के प्रति इन कर्तव्य यज्ञ को आयोजित करता रहेगा। यज्ञ का प्रकाश मानवता के लिए प्रसारित करता रहेगा।

अगले वर्ष आर्य समाज की स्थापना का 150 वां वर्ष आरंभ होने जा रहा है। यह दोनों अवसर महत्वपूर्ण अवसर है। और अभी आचार्य जी ने बताया कि स्वामी श्रद्धानंद जी के मृत्यु तिथि के 100 साल भी वर्ष 2026 में हो रहे हैं। यानी एक प्रकार से त्रिवेणी की बात हो गई। महर्षि दयानंद जी स्वयं ज्ञान की ज्योति थे। हम सब भी उस ज्ञान की ज्योति बने। आदर्शों और मूल्यों के लिए वह जीए, आदर्शों और मूल्यों के लिए उन्होंने जीवन खपाया और जहर पीकर के हमारे लिए अमृत देकर के गए हैं। आने वाले अमृतकाल में वो अमृत हमें मां भारती के और कोटि-कोटि देशवासियों के कल्याण के लिए निरंतर प्रेरणा दे, शक्ति दे, सामर्थ्य दे। अपने उद्बोधन के अंत में प्रधानमन्त्री जी ने कहा कि मैं आर्य प्रतिनिधि सभा के सभी महानुभावों का अभिनंदन करता हूं। जिस प्रकार से आज के कार्यक्रम को प्लान किया गया है, मुझे यहां आकर के यह जो भी 10_15 मिनट इन सब चीजों को देखने को मौका मिला, मैं मानता हूं कि प्लैनिंग, मैनेजमेंट और एजुकेशन हर प्रकार से इस उत्तम आयोजन के लिए आप सब अभिनंदन के अधिकारी हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की "द्वि शताब्दी समारोह श्रृंखला" आयोजन समिति ने आह्वान किया है कि हम सब आर्यजनों का परम कर्तव्य है कि हम सब मिलकर एक तरफ प्रधानमंत्री जी के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त करें और दूसरी तरफ अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए भी संकल्प लेकर आगे बढ़ें।

अनेक गणमान्यों की थी गरिमामय उपस्थिति

इस अवसर पर गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, मंत्री श्री विनय आर्य, भारत सरकार के केंद्रीय मंत्रिमंडल के सदस्य श्री जी. किशन रेड्डी, श्रीमती मीनाक्षी लेखी, श्री अर्जुन राम मेघवाल, डीएवी ट्रस्ट के अध्यक्ष पदमश्री पूनम सूरी व आर्य समाज जीवन प्रभात, गांधीधाम के अध्यक्ष आचार्य वाचोनिधि आर्य आदि सहित देशभर से पधारे मूर्धन्य सन्यासीगण, गुरुकुलों के आचार्य, सभाओं के पदाधिकारी व आर्य समाजों के प्रतिनिधगण बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

स्टेडियम में उमड़ा पड़ा जनसैलाब_केसरी।

फिजी के नादी में हुआ महर्षि दयानंद एवं आर्य समाज का निनाद

- 12वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में धनोरा जनपद अमरोहा के निवासी डॉ यतीन्द्र कटारिया ने महर्षि दयानंद एवं आर्य समाज द्वारा विश्व पटल पर हिंदी के संवर्धन में योगदान पर दी प्रस्तुति।

- डॉ कटारिया की पुस्तक सात समुंदर पार हिन्दी का हुआ विमोचन।

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

फिजी / डॉ. रूबी सिंह गुर्जर।

सुदूर देश फिजी के ऐतिहासिक नादी शहर में 15 से 17 फरवरी 2023 तक विदेश मंत्रालय भारत सरकार एवं फिजी सरकार के संयुक्त तत्वाधान में

आयोजित 12 वे विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर विदेश मंत्रालय के निमंत्रण पर भारत सरकार के प्रतिनिधि मंडल के सदस्य के रूप में फिजी पहुंचे प्रसिद्ध लेखक एवं वक्ता तथा सामाजिक कार्यकर्ता वरिष्ठ शिक्षक डॉ यतींद्र कटारिया विद्यलंकार ने फिजी के नादी शहर में हिन्दी के संबर्धन में महर्षि दयानंद तथा आर्य समाज के योगदान का गौरवपूर्ण निनाद करते हुए अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया तथा महर्षि दयानंद एवं आर्य समाज के योगदान पर विस्तार से विचार प्रस्तुत करते हुए विश्व हिंदी सम्मेलन में महर्षि दयानंद है एवं आर्य समाज के योगदान के दृष्टिगत विशेष सत्र आयोजन करने की मांग की ।

12 वे विश्व हिंदी सम्मेलन स्थल देनाराऊ आइसलैंड कन्वेंशन सेन्टर नादी (फिजी) में जब विभिन्न समानांतर सत्र एवं शोध पत्रों के माध्यम से विभिन्न वक्ता हिंदी के संवर्धन में विभिन्न विभिन्न विचार एवं ज दलील प्रस्तुत कर रहे थे उस समय महर्षि दयानंद एवं समाज के गौरव पूर्ण योगदान का डिंडिम निनाद करते हुए महर्षि दयानंद एवं आर्य समाज द्वारा विश्व पटल पर हिंदी संवर्धन विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए प्रखर वक्ता एवं प्रतिष्ठित रचनाकार डा. यतीन्द्र कटारिया कहा कि युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद ने हिंदी को सबसे पहले राष्ट्रभाषा का गौरवशाली दर्जा प्रदान किया तथा हिंदी का सम्मान और स्वाभिमान बढ़ाते हुए अपने सकल ग्रंथ हिंदी में लिखे और हिंदी को आर्य भाषा का दर्जा प्रदान करते हुए आर्य समाज के क्रियाकलापों के माध्यम से हिंदी को ही बढ़ाने में महान योगदान दिया। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानंद की बदौलत हिंदी स्वतंत्रता आंदोलन की संवाहक बनी तथा हिंदी के साहित्यकारों एवं देश के स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को आत्मसात करते हुए आगे बढ़ाने का संकल्प महर्षि दयानंद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से ही ग्रहण किया। डा. कटारिया ने कहा कि देश में हिंदी के लिए एकमात्र सत्याग्रह पंजाब हिंदी सत्याग्रह आर्य समाज द्वारा चलाया गया हिंदी के संवर्धन में योगदान प्रदान करते हुए आर्य समाज द्वारा आर्यमित्र आर्य मयार्दा आर्य दिवाकर आदि हिंदी के प्रथम समाचार पत्रों का प्रकाशन प्रारंभ किया इसके अलावा अहिंदी क्षेत्रों में जा जाकर आर्य समाज के विद्वानों एवं कार्यकताओं ने हिंदी को बढ़ाने में योगदान दिया। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार सहित विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं एवं डीएवी संस्थानों ने भी हिंदी को आगे बढ़ाने में योगदान दिया विशेष रुप से ग्रुप महाविद्यालय ज्वालापुर के भारत उदय पत्रिका गुरुकुल कांगड़ी की गुरुकुल पत्रिका स्वामी श्रद्धानंद द्वारा संपादित सब धर्म प्रचारक आदि पत्र-पत्रिकाओं का हिंदी के संवर्धन में विशेष योगदान रहा है । गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के संस्थापक स्वामी दर्शनानंद सरस्वती हिंदी के उद्भट लेखक एवं विद्वान व्यक्तित्व रहे हैं। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हिंदी के प्रबुद्ध रचनाकारों की प्रमुख स्थली रहा है जहां के स्नातकों ने हिंदी को संवर्धन प्रदान करने में महत्वपूर्ण आहुति दी है। गुरुकुल महाविद्याल ज्वालापुर के प. पद्य सिंह शर्मा आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन डॉ सत्यव्रत शर्मा अजेय जी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रो विष्णु दत्त राकेश का हिंदी साहित्य में विशेष योगदान रहा हैइस प्रकार आर्य समाज के मंच से हिंदी के संवर्धन में योगदान देने वाले अनेक कवि साहित्यकार पत्रकार एवं चिंतक गणों की लंबी श्रृंखला रही है ।

उन्हानें कहा कि महाराष्ट्र आंध्र प्रदेश पश्चिम बंगाल गुजरात आदि अनेक हिंदी राज्यों में हिंदी को बढ़ाने और वहां के राष्ट्रीय नेताओं द्वारा हिंदी के प्रति अनुराग व्यक्त करने में आर्य समाज की मुख्य भूमिका रही है। डॉक्टर यतींद्र कटारिया ने कहा कि भारत की सीमाओं के बाहर मॉरीशस फिजी गयाना सूरीनाम कनाडा आदि अनेक देशों में आर्य समाज के विद्वानों ने हिंदी का प्रचार और प्रसार किया तथा वहां स्थापित आर्य समाज की इकाइयों के द्वारा हिंदी के वैश्विक पटल पर विस्तार में मुख्य भूमिका रही है । आर्य समाज के अनेक विद्वानों ने हिंदी साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है जिनमें पदम सिंह शर्मा क्षेमचंद सुमन नाथू शंकर शर्मा प्रकाश चंद्र कवि रत्न धर्मवीर भारती आदि की लंबी श्रृंखला है, मॉरीशस में हिंदी के विस्तार और संवर्धन में आर्य समाज की भूमिका सबसे अग्रणी रही है वहां आर्य समाज के तत्वाधान में न सिर्फ पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन के माध्यम से हिंदी विकास का रथ आगे बढ़ा है बल्कि आर्य समाज के विद्वानों एवं कार्यकताओं ने हिंदी के प्रचार प्रसार को एक आंदोलन के स्वरूप में हिन्दी को आगे बढ़ाया है इसी तरह फिजी गयाना एवं सूरीनाम में अनेक पत्र पत्रिकाएं आर्य समाज द्वारा प्रकाशित की गई हॉलैंड अमेरिका कनाडा में भी आर्य समाज के द्वारा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हिंदी के संवर्धन में योगदान दिया गया । दक्षिण अफ्रीका में गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक दिलीप वेदालंकार द्वारा स्थापित हिंदी शिक्षा संघ की हिंदी के संवर्धन में उल्लेखनीय भूमिका रही है

इस प्रकार भारत से लेकर दुनिया के सुदूर देश फिजी मॉरीशस कनाडा और इंग्लैंड अमेरिका आदि अनेक देशों में आर्य समाज के द्वारा हिंदी का प्रचार प्रसार किया गया हिंदी के संवर्धन में एवं साहित्य सृजन में महर्षि दयानंद एवं आर्य समाज का योगदान अविस्मरणीय है । 12 वें विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर डॉ यतींद्र कटारिया विद्यालंकार ने कहा कि यह सुखद संयोग है कि इस वर्ष युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद का वर्ष भर चलने वाली जयन्ती समारोह आयोजन श्रृखंला का प्रारंभ 12 फरवरी को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा किया गया वही फिजी में इस वर्ष 12वां विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है अतः महर्षि दयानंद एवं आर्य समाज द्वारा हिंदी के संवर्धन के योगदान को समाहित करते हुए विदेश मंत्रालय द्वारा विश्व हिंदी के योगदान में महर्षि दयानंद एवं आर्य समाज की भूमिका को संबोधित करते हुए विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाएं ।

उत्तर प्रदेश के नगर मण्डी धनौरा जनपद अमरोहा निवासी तथा पेशे से शिक्षक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के यशस्वी स्नातक डॉ यतींद्र कटारिया विद्यालंकार की नवीन पुस्तक सात समुंदर पार हिंदी का विश्व हिन्दी सम्मेलन के मंच से विमोचन विदेश राज्य मंत्री बी मुरलीधरण गृह राज्य मंत्री अमित मिश्रा एवं महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर रजनीश शुक्ला के द्वारा किया गया इस पुस्तक के माध्यम से डॉ कटारिया ने विश्व पटल पर हिंदी के बढ़ते हुए विस्तार तथा उसमें महर्षि दयानंद एवं आर्य समाज के योगदान को भी उल्लेखित किया है इस पुस्तक को गौ रक्षा एवं हिंदी सत्याग्रही अपने दादा एवं ऋषि भक्त महाशय भारत सिंह आर्य को समर्पित करते हुए आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद के दो सौं वे जन्मदिवस के उपलक्ष्य में ऋषिवर के योगदान को नमन किया है ।

गुरुकुल दयानंद सेवाश्रम में हुआ भव्य ऋषि बोधोत्सव

बहुत ही आकर्षक रहीं ब्रह्मचारियों की प्रस्तुतियां

रामपुर में आयोजित ऋषि बोध उत्सव का दृश्य।

ब्रह्मचारियों ने किए अनेक भव्य प्रदर्शन।

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

रठौंडा (रामपुर) उत्तर प्रदेश। आर्य प्रतिनिधि सभा जनपद रामपुर के तत्वाधान में गुरुकुल दयानंद सेवाश्रम वेद मंदिर रठौण्डा के प्रांगण में ऋषि बोध उत्सव के उपलक्ष्य में वेद प्रचार कार्यक्रम भव्यता पूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व विधानसभा प्रत्याशी श्री भारत भूषण गुप्ता ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती ने सारे संसार के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। समारोह को संबोधित करते हुए विशिष्ट अतिथि श्री शरद कुमार गुप्ता तथा डॉ. अनिल कुमार गुप्ता ने वेद के मार्ग पर चलने का आवाहन किया। सभा की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा रामपुर के प्रधान श्री गंगाराम आर्य ने की तथा संचालन ओमवीर सिंह "वैदिक" ने किया। इस अवसर पर वैदिक क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित करने वाले वरिष्ठ नागरिकों सर्वश्री रघुवीर सिंह आर्य - मसवासी, श्री राजेंद्र कुमार आर्य - हल्दुआ, श्री रविंद्र कुमार आर्य- गंगापुर तथा श्री सुभाष चंद्र रस्तोगी-रामपुर को शाल उड़ाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन यज्ञोपरांत ऋषि लंगर (भंडारे) तथा अपराह्न बेला में विशाल जन सभा के साथ हुआ। इस अवसर पर वैदिक विद्वान सर्व श्री स्वामी श्रद्धानंद आर्य - बदायूं, श्री ओमवीर सिंह आर्य - बुलंदशहर, श्री वीर देव आर्य - मिलक रामपुर, बहिन पुष्पा आर्य शास्त्री - संभल बहिन यशोदा आर्य बदायूं श्री जितेंद्र देव आर्य - एवं श्री यश देव आर्य- बरेली ने अपने मुखारविंद से भजन उपदेश के माध्यम से वेदों के ज्ञान की वर्षा की। तत्पश्चात गुरुकुल के प्राचार्य श्री आदित्य कुमार शास्त्री तथा वरिष्ठ आचार्य राहुल आर्य के निर्देशन में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने अपने कौशल का प्रदर्शन करते हुए उपस्थित जनसमूह को का मन मोह लिया। सभी उपस्थित लोगों ने ब्रह्मचारियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। आज की सभा में अनेक गणमान्य व्यक्ति तथा आर्यजन उपस्थित हुए। अंत में सभा अध्यक्ष श्री गंगाराम आर्य द्वारा सभी जनों को धन्यवाद दिया।

आर्यावर्त केसरी कार्यालय में

चारों वेदों के काव्यार्थ कर्ता कवि वीरेन्द्र कुमार राजपूत का भव्य स्वागत

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

अमरोहा। चारों वेदों का काव्यार्थ करने वाले कवि श्री वीरेंद्र कुमार राजपूत का अमरोहा में आगमन पर भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम आर्यावर्त कॉलोनी में राष्ट्र कल्याण यज्ञ संपन्न हुआ।

श्री राजपूत ने अपने प्रवचनों में कहा कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। उन्होंने वेदों को अपौरुषेय कहते हुए वेद को परम धर्म की संज्ञा दी।

उल्लेखनीय है कि श्री राजपूत जी द्वारा वेदो के काव्यार्थ, जिनमें यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा सामवेद हैं, किए जा चुके हैं। वर्तमान में ऋग्वेद के काव्यार्थ का भाग 1 प्रकाशित होने के बाद अभी भाग २ प्रकाशनाधीन है। ऋग्वेद के कुल 10 भाग प्रकाशित किए जाने हैं। इस अवसर पर कवि श्री राजपूत ने ओ३म की व्याख्या करते हुए कहा कि ओ३म प्राणाधार है, ओ३म ही दुख का विनाशक तथा सब सुखों का दाता है। उन्होंने कहा कि ओ३म परमपिता परमात्मा का प्रमुख नाम है। देहरादून से अपनी पुत्री श्रीमती प्रतिभा राजपूत तथा दामाद श्री राजकुमार के साथ पधारे श्री राजपूत जी का गोकुल विहार स्थित आर्यावर्त केसरी कार्यालय में पुष्पमाला तथा शॉल के साथ भव्य अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर उन्होंने सपरिवार गोकुल विहार स्थित हेमा नंद आर्य गौशाला का निरीक्षण भी किया। उन्होंने गाय को विश्व की माता बताते हुए गाय की महिमा का बखान भी किया। इस अवसर पर आर्यावर्त केसरी के मुख्य संपादक डॉ. अशोक कुमार रुस्तगी, साहित्य संपादक डॉ. बीना रुस्तगी, विरेंद्र सिंह आजाद, प. चंद्रपाल यात्री, देवेश कुमार शर्मा, प्रबोध सक्सेना, श्याम बिहारी अग्रवाल, अनिल कुमार जोशी, श्रीमती शकुंतला देवी व मलिक आदि सहित अनेक जन उपस्थित थे।

महिला दिवस व होली पर काव्य गोष्ठी संपन्न

महर्षि दयानन्द ने नारी शक्ति को सम्मान प्रदान किया- अनिल आर्य

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

नई दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में होली पर्व व अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 515 वाँ वेबिनार था। इस अवसर पर परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने महिला शक्ति को अत्यधिक सम्मान प्रदान किया उन्होंने कहा कि जिस घर में नारी का सत्कार होता है वह घर स्वर्ग के समान है। श्री आर्य ने होली पर्व की बधाई देते हुए सबके मंगल की कामना की। गोष्ठी में वैदिक विदुषी अनिता रेलन ने कहा कि नारी शक्ति परिवार व समाज का आधार है यदि नारी सुशिक्षित संस्कारवान होगी तो वैसे ही समाज का निर्माण करती है। मुख्य अतिथि प्रो. करुणा चांदना ने कहा कि नारी अब अबला नहीं सबला है और हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही है। अध्यक्षता करते हुए माता उषा सूद ने व्यंगात्मक कविता सुनायी। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने सभी को शुभकामनाएं देते हुए आभार प्रकट किया। इस अवसर पर गायक नरेंद्र आर्य सुमन, पिंकी आर्य, रजनी चुग, रजनी गर्ग, जनक अरोड़ा, प्रतिभा कटारिया, कौशल्या अरोड़ा, अंजू खरबंदा, रिचा गुप्ता, कुसुम भंडारी, प्रवीना ठक्कर, सुदेश आर्य, रीता जयहिंद, सुदर्शन चौधरी, राज सरदाना व कमलेश चांदना आदि ने मधुर गीत सुनाए।

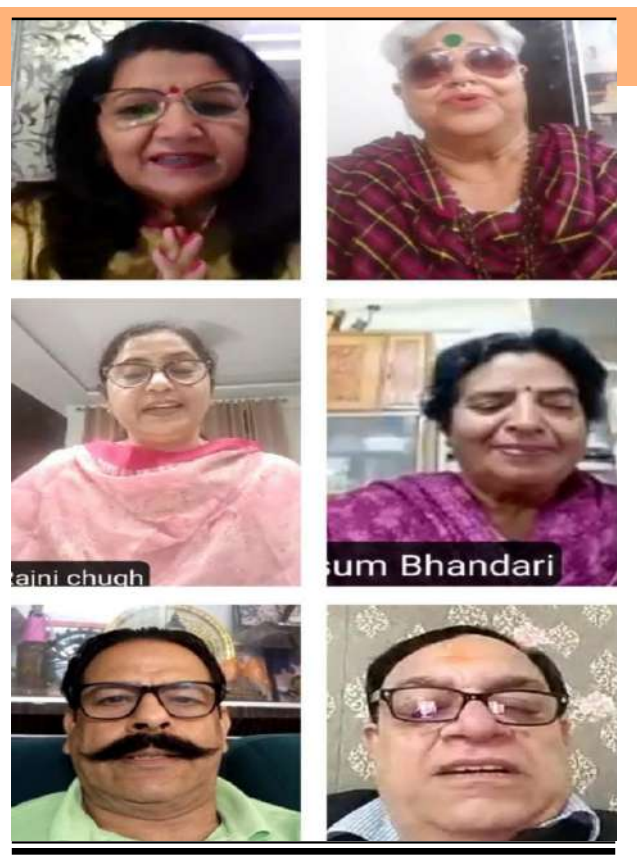

श्रद्धा पूर्वक मनाया ऋषि दयानंद का जन्मोत्सव

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

बदायूं / विवेक जौहरी। युग दृष्टा, ईश्वर द्वारा दिए गए ज्ञान वेद के प्रचारक, स्वाधीनता संग्राम में क्रांति का बिगुल बजाकर सैकड़ों क्रांतिकारी उत्पन्न करने वाले, दलित उद्धारक, नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक, मानवतावादी, सांप्रदायिकता, जातिवाद, छुआछूत , अंधविश्वास, पाखंड, अन्याय व अत्याचार के विरोधी, संपूर्ण विश्व को ईश्वर के ज्ञान वेद का स्मरण कराने वाले, राम, कृष्ण एवं हनुमान द्वारा अनुकरण की गई उपासना पद्धति के प्रचारक, गुजरात के मोरबी राज्य के टंकारा ग्राम में 12 फरवरी 1824 में जन्मे ऋषिराज महर्षि दयानंद सरस्वती धन्य है। यह विचार सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका व गोकरुणानिधि आदि अनेक पुस्तकों के लेखक, गुरुकुल शिक्षा के समर्थक एवं प्रचारक , सत्य सनातन वैदिक संस्कृति के प्रचारक के रूप में जीवन अर्पित करने वाले स्वामी दयानंद सरस्वती जी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में आर्य समाज बदायूं के साप्ताहिक सत्संग के दौरान व्यक्त किए गए। इस अवसर पर स्त्री आर्य समाज की मंत्री श्रीमती शशि आर्य, सेवानिवृत्त प्रवक्ता श्रीमती दिव्या यादव आर्य , आर्य समाज बदायूं के वरिष्ठ सभासद पंडित चंद्रभान शर्मा ने महर्षि दयानंद के जीवन एवं कृत्य से संबंधित गीत प्रस्तुत किए , वहीं दूसरी ओर वरिष्ठ सभासद विवेक जौहरी ने महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा किए गए महान कार्यों के संबंध में एक सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस अवसर पर मुख्य यजमान एवं आर्य समाज बदायूं के वरिष्ठ कोषाध्यक्ष विपिन जोहरी ने महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा बताए गए मार्ग पर चलने का आवाहन किया। आर्य समाज बदायूं के युवा कार्यकर्ता अमन सक्सैना और अनमोल गुप्ता ने महर्षि दयानंद सरस्वती के द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश की प्रशंसा करते हुए बताया कि इस ग्रंथ ने देश की आजादी, हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में व सांप्रदायिकता के उन्मूलन में महती भूमिका निभाई है। उन्होंने अपने उदबोधन में कहा कि अधिक से अधिक लोगों को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना चाहिए। उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के पूर्व प्रांतीय सदस्य डॉ ज्ञानेंद्र जिज्ञासु ने वेद मंत्र की व्याख्या करते हुए बताया कि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है। इस बेला में डॉ. विजय प्रकाश आर्य ने महर्षि दयानंद सरस्वती से संबंधित स्वरचित मुक्तक प्रस्तुत किए। वरिष्ठ आर्य समाजी सभासद देशराज सक्सेना ने आर्य जनों से आह्वान किया कि आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में प्रत्येक रविवार को पूर्वाहन 10:00 बजे मधुबन कॉलोनी स्थित वैदिक यज्ञशाला पर, जो कि वर्तमान में आर्य समाज दयानंद सेवाश्रम, बदायूं का शिविर कार्यालय है , पर पधारें। उन्होने बताया कि यहां प्रत्येक रविवार को देव यज्ञ, प्रभु भक्ति के गीत, देश की एकता अखंडता को सशक्त बनाए रखने के लिए विचार गोष्ठी का आयोजन किया जाता है , वहीं, विश्व शांति एवं विश्व कल्याण के लिए ईश्वर से प्रार्थना भी की जाती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ उप प्रधान डॉ. विजय प्रकाश आर्य ने की एवं संचालन वरिष्ठ अधिवक्ता एवं आर्य समाज बदायूं के पुस्तकाध्यक्ष श्री भूपेंद्र पाल सिंह एडवोकेट ने किया। इस अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी एवं सेवानिवृत्त बैंक प्रबंधक प्रदीप कुमार वार्ष्णेय ने महर्षि दयानंद सरस्वती को स्वाधीनता संग्राम का प्रणेता बताते हुए श्रद्धा पूर्वक नमन किया। वरिष्ठ पत्रकार एवं अधिवक्ता विकास बाबू आर्य ने महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा स्त्री शिक्षा, अनाथ बच्चों, विधवाओं ,दलितों, वंचितों के सम्मान में किए गए कार्यों की विस्तार से चर्चा की।

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा

(आर्ष वैदिक साहित्य एवं राष्ट्र चेतना संबंध साहित्य के प्रकाशक)

प्रकाशित पुस्तकों की सूची:

अर्चना यज्ञ पद्धति ..... मूल्य रू. 20
आर्य पर्व पद्धति ..... मूल्य रू. 25
यज्ञ पद्धति ..... मूल्य रू. 35
आर्य समाज बुला रहा है ..... मूल्य रू. 6
कर्मफल रहस्य ..... मूल्य रू. 10
आर्य समाज की मान्यताएं ..... मूल्य रू. 8
आर्य समाज की विचारधारा ..... मूल्य रू. 5
सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़े ..... मूल्य रू. 2
महर्षि दयानंद के जीवन के विविध प्रसंग मूल्य रू. 20
नीति शतक भाग-1, भाग-2----------(प्रत्येक का मूल्य रू. 20)
वैदिक सिद्धांत विमर्श ..... मूल्य रू. 25
भजन माला ..... मूल्य रू. 20
आर्योद्देश्यरत्नमाला ..... मूल्य रू. 8
महर्षि दयानंद की विशेषताएं ..... मूल्य रू. 8
आर्य समाज की मान्यताएं ..... मूल्य रू. 8
अंत्येष्टि संस्कार विधि ..... मूल्य रू. 8
आर्य कन्या की सूझबूझ ..... मूल्य रू. 8
दयानंद लघु ग्रंथ संग्रह ..... मूल्य रू. 60
संस्कार विधि ..... मूल्य रू. 80
दयानंद सुविचार धन ..... मूल्य रू. 70
कथा सरोवर ..... मूल्य रू. 50
मानव कल्याण निधि ..... मूल्य रू. 100
सत्यार्थ प्रकाश बिना जिल्द (छोटा) मूल्य रू. 80
सत्यार्थ प्रकाश सजिल्द (बड़ा) .. मूल्य रू. 250
प्रखर राष्ट्रचेता महर्षि दयानंद ....प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी विरजानंद
प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी श्रद्धानंद ...प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी दर्शनानंद
प्रखर राष्ट्रचेता महात्मा हंसराज ...प्रखर राष्ट्रचेता महात्मा लेखराम
प्रखर राष्ट्रचेता गुरुदत्त विद्यार्थी ..प्रखर राष्ट्रचेता लाला लाजपत राय
प्रखर राष्ट्रचेता पं. रामप्रसाद बिस्मिल .प्रखर राष्ट्रचेता सरदार भगत सिंह
प्रखर राष्ट्रचेता डॉक्टर हेडगेवार ..प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी विवेकानंद
प्रखर राष्ट्रचेता सरदार पटेल ....प्रखर राष्ट्रचेता प्रकाशवीर शास्त्री
प्रखर राष्ट्रचेता डॉ. भीमराव अंबेडकर
प्रखर राष्ट्रचेता पं. श्यामा प्रसाद मुखर्जी प्रखर राष्ट्रचेता पं. दीनदयाल उपाध्याय
(ऐसे ही अन्य अनेक महापुरुषों के संक्षिप्त जीवन चरित्र/ प्रत्येक का मूल्य रू.10/)
अग्निहोत्र लैमिनेटेड फोल्डर मूल्य रू.10 ब्रह्म यज्ञ (संध्या) लैमिनेटेड फोल्डर रू. 6
महिला क्रांति गीत ..... मूल्य रू. 80
रंग बदलती दुनिया ..... मूल्य रू. 50
योग यौवन और प्रकृति पर्यावरण .. रू. 100
चतुर्वेद भाष्य .....संस्कार विधि
मनु स्मृति .....गौ करुणानिधि
यज्ञ और पर्यावरण .....बंदा बैरागी
दयानंद सप्तक
हिंदी के प्रचार प्रसार में आर्य समाज की भूमिका
रामायण का वास्तविक स्वरूप
यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा सामवेद
(कवि वीरेंद्र राजपूत कृत काव्यार्थ)
लाला लाजपत राय समग्र
स्वामी श्रद्धानंद समग्र
जन जागरण भाग 2 ..... मूल्य रू. 70

आदि सहित आर्यावर्त प्रकाशन एवं देश के प्रमुख प्रकाशनों के साहित्य बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। समस्त साहित्य पर विशेष छूट उपलब्ध है कृपया आज ही साहित्य खरीदें और पाएं विशेष छूट।

संपर्क सूत्र : 94121 39333 , 87552 68578

महिलाएं समाज में परिवर्तन का ले संकल्प - विनय आर्य

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आर्य समाज ने किया बृहद् यज्ञ

मंचासीन विनय आर्य तथा सतीश चड्ढा सहित महिला अतिथि गण_ केसरी।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 11 कुंडीय यज्ञ का दृश्य् केसरी।

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

कोटा। महिलाएं समाज में परिवर्तन का संकल्प लें क्योंकि समाज का समग्र विकास महिलाओं के बिना असंभव है। पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं यह बेहतर तरीके से जानती हैं कि उन्हें क्या-क्या परिवर्तन करने हैं और ये किस तरह से होंगे। इसलिए आज आवश्यकता है कि महिलाएं समाज में परिवर्तन का संकल्प लें उक्त विचार आर्य नेता विनय आर्य महामंत्री दिल्ली सभा ने महर्षि दयानंद सेवा समिति, कोटा द्वारा आयोजित महिला दिवस समारोह के अवसर पर व्यक्त किए। अपने संबोधन में विनय आर्य ने कहा कि जहां आज से कुछ वर्ष पूर्व विकसित राष्ट्रों में भी महिलाओं को समानता के आधार पर वोट देने का अधिकार नहीं था, वही आज से 150 वर्ष पूर्व आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने अपने संगठन में स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार प्रदान करते हुए वोट देने का अधिकार प्रदान किया। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती की विचारधारा स्पष्ट थी कि महिलाओं को समानता का अधिकार दिए बिना भारत राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता है।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि सतीश चड्ढा, अध्यक्ष _ केंद्रीय आर्य सभा दिल्ली राज्य ने अपने उद्बोधन में कहा कि मां मनुष्य की प्रथम गुरु होती है और यदि प्रथम गुरु सर्वाधिकार संपन्न है तो वह समाज विकसित बना रहता है। कार्यक्रम के बारे में जानकारी देते हुए समिति के महामंत्री राकेश चड्ढा ने बताया कि आचार्य अग्निमित्र शास्त्री के ब्रह्मत्व मे 11 कुण्डीय बृहद् देवयज्ञ में उपस्थित महिलाओं ने वेद मंत्रोच्चार पूर्वक आहुतियां प्रदान की । समिति की अध्यक्ष रीटा गुप्ता ने बताया कि यज्ञ के पश्चात कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. सावित्री चौधरी, प्राचार्य , मां भारती टीटी कॉलेज ने की तथा मुख्य अतिथि डॉ. संगीता सक्सेना, रेडियोलॉजिस्ट मेडिकल कॉलेज, कोटा व विशिष्ट अतिथि सरोज गोयनका श्रीमती ममता खंडेलवाल , डॉ कांता दासवानी डायरेक्टर दासवानी डेंटल कॉलेज कोटा तथा स्थानीय पार्षद विवेक मित्तल रहे ।

समिति के महामंत्री राकेश चड्ढा ने बताया कि तीन दिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित 25 सांस्कृतिक , बौद्धिक खेलकूद तथा योगासन प्रतियोगिताओं में 75 पदक विजेता महिलाओं को गोल्ड सिल्वर व ब्रोंज मेडल प्रदान कर सम्मानित किया गया तथा समाज सेवा और महिला सशक्तिकरण के लिए 21 महिलाओं को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। समिति की शबनम सिंह व कीर्ति गौतम के अनुसार 200 से अधिक महिला प्रतिभागियों का भी सम्मान किया गया। इससे पूर्व वेद विदुषी डॉ. सुदेश आहूजा, श्रीमती ममता खंडेलवाल तथा डॉ. कांता दासवानी ने भी संबोधित किया । इस अवसर पर आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा संभाग के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा, पतंजलि भारत स्वाभिमान के राज्य प्रभारी अरविंद पांडेय, स्थानीय वार्ड पार्षद विवेक मित्तल, आर्य समाज तलवंडी की प्रधान सुमनबाला सक्सेना, हिंदी की वरिष्ट लेखिका डॉ. अपर्णा पांडेय, आर्य उप प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री लालचंद आर्य, भैरों लाल शर्मा, किशन आर्य, पं. श्योराज वशिष्ठ तथा नरेन्द्र शर्मा आज सहित बड़ी संख्या में गणमान्य जन उपस्थित रहे।

वार्षिक तथा आजीवन सम्मानित सदस्यों की सेवा में आवश्यक सूचना

आदरणीय महोदय/महोदया!

सादर नमन,

आशा है स्वस्थ एवं सानंद होंगे।

आपकी "आर्यावर्त केसरी" की वार्षिक सदस्यता सहयोग राशि समाप्त हो चुकी है।

अतः अनुरोध है कि आगामी वर्ष (2023-24) के नवीनीकरण हेतु **वार्षिक सदस्यता सहयोग राशि रू0 100/-** अथवा **आजीवन सदस्यता सहयोग राशि (10 वर्षीय) रु. 1100/-** निम्न बचत खाते (S.B. A/C) में जमा करने का कष्ट करें :

खाते का नाम : आर्यावर्त केसरी
खाता संख्या : 30404724002
IFSC कोड : SBIN0000610

शाखा : भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा

कृपया उक्त खाते में अपनी सहयोग

राशि जमा करने के उपरांत **मो. नं. 9412139333** अथवा **7017448224** पर अवगत कराने का कष्ट करें। उल्लेखनीय है कि समस्त आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र उनके **"जन्म - दिवस"** के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित आर्यावर्त केसरी में प्रतिवर्ष प्रकाशित किए जायेंगे।

सादर- सधन्यवाद

शुभाकांक्षी-
कृते आर्यावर्त केसरी/ "प्रभारी-प्रसार"

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना शिविर होगा 3 जून से

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर 2023 इस बार हरियाणा में दिनांक 3 से 11 जून 2023 तक लगाया जाएगा। शिविर के स्थान की सूचना बाद में दी जाएगी। यह जानकारी देते हुए संचालिका मृदुला चौहान ने बताया कि इस शिविर में भाग लेने के लिए 14 वर्ष से अधिक आयु की आर्य वीरांगनायें दिनांक 20 मई 2023 तक अपने नाम अग्रांकित मोबाइल नंबर 87504 82498 , 98107 02760 , 99102 34595 अथवा 98102 74318 पर अंकित करा दें, ताकि सुचारू व्यवस्था हो सके।

19 वर्षों से निरंतर ॥ ओ३म् ॥
34वाँ हिन्दू सर्वजातीय परिचय सम्मेलन
2 अप्रैल 2023 रविवार
स्थान : संतोष सभागृह
राणीसती गेट, इन्दौर (म.प्र.)
अविवाहित, विधवा/विधुर, तलाकशुदा, अधिक आयु के
सर्वजातीय परिणय स्मारिका में
बायोडाटा फोटो प्रिंट कराएं।
युवतियों का रजिस्ट्रेशन फ्री
9977987777
9977957777
संयोजक- डॉ. आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार
आयोजक: आर्य समाज मंदिर
219, संचार नगर, इन्दौर (म.प्र.) 452016

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर अप्रैल–२०२३

स्वामी सत्यपति परिव्राजक

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, गुजरात
(आवश्यक सूचनायें तथा नियमावली)

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ में चैत्र कृष्ण ५ से चैत्र कृष्ण १२ २०७७ तदनुसार ६ से १६ अप्रैल तक ८ दिन के क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन " मुनि सत्यजित् जी " की अध्यक्षता में किया जा रहा है । इस में आपका स्वागत है तथा आपके कल्याण की कामना करते हैं। शिविर में क्रियात्मक योग साधना सिखाने के साथ–साथ योग दर्शन के सूत्रों का अध्यापन, यम–नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विवेक–वैराग्य–अभ्यास, जप–विधि, ईश्वर–समर्पण, स्व–स्वामी सबंध तथा ममत्व को हटाने जैसे अनेक सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया जाएगा। शिविर की दिनचर्या प्रातः ४ से रात्रि ६:३० बजे तक रहेगी।

प्रशिक्षक :– (१) स्वामी विष्वङ् जी (२) मुनि सत्यजित् जी (३) आचार्य सन्दीप जी (४) आचार्य सत्येंद्र जी (५) मुनि ऋतमा जी (६) आचार्य नवानन्द जी (७) आचार्य गौतम जी

नियम :–

१) मंत्रपाठ, श्लोकगायन व कक्षाओं को छोड़ करके शिविरार्थियों को दिनभर मौन का पालन करना होगा।
२) कम से कम १० (दसवीं) कक्षा तक की योग्यता हो, पूर्ण अनुशासन में चलने वाला तथा तपस्वी हो।
३) १५ से ८० वर्ष तक आयु वाले स्त्री–पुरुष भाग ले सकते हैं।
४) शिविरार्थी अपने साथ नित्योपयोगी वस्तुएं, औषधि, करदीपक (टॉर्च), पेन, नोटबुक आदि लावें। शिविर में प्रयोग हेतु सादे वस्त्र (सफेद अथवा पीले) लावें । छोटे बच्चे, कीमती सामान, रेडियो, खाद्य सामग्री आदि अपने साथ न लावें। यदि कोई कीमती सामान,खाद्य सामग्री आदि साथ में हो तो शिविर से पूर्व कार्यालय में जमा कर देवें।
५) शिविरार्थियों को शिविर काल में चलभाष (मोबाईल) करने की अनुमति नहीं रहती है, चलभाष कार्यालय में जमा करवाना होता है। किसी को बहुत आवश्यक होगा तो स्वीकृति लेकर कार्यालय से फोन कर सकेंगे।
६) रोगी (विशेषतः खांसी–जुकाम, जोडों के दर्द, उदरवायु की अधिकता वाले), अशक्त, वृध्द, धूम्रपान आदि व्यसनों वाले व्यक्ति कृपया शिविर में भाग लेने के लिए आवेदन न करें।
७) दूर से आने वाले शिविरार्थी अपना वापसी का यात्रा आरक्षण पूर्व ही करा लेवें।
८) आवास व्यवस्था की कमी आदि अनेक कारणों से शिविरार्थी सीमित संख्या में लिए जाते हैं तथा प्रथम आवेदकों को प्राथमिकता दी जाती है। पुरुष और महिलाओं की पृथक् एवं सामूहिक आवास व्यवस्था रहती है।
९) शिविर शुल्क प्रति व्यक्ति २०००/–रुपये है, जिसे आवेदन के साथ पहले ही जमा करना होता है। स्थानाभाव, अयोग्यता अथवा अन्य किसी कारण से प्रवेश न देने की स्थिति में शिविर शुल्क २००० रुपये लौटा दिया जाता है। स्वीकृति प्राप्त शिविरार्थियों के न आने पर शुल्क लौटाया नहीं जाता है।
१०) बिना स्वीकृति के शिविर में आ जाने वालों को स्थान होने पर ही स्वीकृति दी जाती है, साथ ही उन्हें शिविर शुल्क २०००₹ के स्थान पर २५००₹ देना होता है।
११) जो शिविरार्थी आर्थिक कठिनाई के कारण शुल्क देने में असमर्थ होंगे उनके आवेदन करने पर योग्य जानकर शुल्क में आंशिक या पूर्ण छूट दी जा सकती है।
१२) पंजीकरण ३१ मार्च २०२३ तक करवा लेवें। पंजीकरण की स्वीकृति होने पर आपको भेजा जाने वाला शिविर प्रवेश पत्रक साथ में अवश्य लायें।
१३) शिविरार्थी ६ अप्रैल २०२३ को प्रातः ६ बजे से सायंकाल ४ बजे के बीच शिविर स्थल पर पहुँच जावें। कृपया इससे पूर्व व पश्चात् न पहुँचें, ऐसा करने से व्यवस्था में बाधा उत्पन्न होती है। शिविर में अन्तिम दिन तक उपस्थित रहना होता है।
१४) शिविरकाल में शिविर स्थल से बाहर जाकर जिन्हें आर्यवन को देखना हो या अन्यों से मिलना, चर्चा, परामर्श आदि करने हों वे प्रथम दिन ६ अप्रैल को सायं ४ बजे से पहले–पहले या अंतिम दिन १ बजे के बाद कर सकते हैं। यदि आपको अपने घर पर अथवा परिजनों को रोजड़ पहुँचने की सूचना देनी हो तो कृपया पंजीकरण से पहले ही दे देवें।

शिविर शुल्क २०००₹ कृपया निम्न बैंक खाते में जमा करें।
नाम :– वानप्रस्थ साधक आश्रम, खाता क्र. 01790100006699
शाखा : बैंक ऑफ बड़ौदा, धनसुरा (जि. अरवल्ली) IFSC NO. BARB0DHANSU

जमा की सूचना इस प्रकार दें :–शिविर शुल्क जमा की बैंक आदि की रसीद का चित्र इस id पर मेल कर दें-vaanaprastharojad@gmail.com या 09427059550 पर व्हाट्सएप कर दें या उसकी फोटोकॉपी आश्रम के पते पर डाक से भेज दें ।

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार

सम्मान हेतु आवेदन-पत्र आमंत्रित हैं

न्यास प्रतिवर्ष महात्मा आर्यभिक्षु (स्वामी आत्मबोध सरस्वती) के दीक्षा दिवस (जन्म दिवस) पर आर्य विद्वानों को सम्मानित करता है। इस बार मार्च 2023 के अंतिम सप्ताह में कार्यक्रम का आयोजन होना है। इस अवसर पर सम्मानित किये जाने वाले वैदिक विद्वानों से जीवन परिचय (बायोडाटा) एवं आमंत्रित किये जाते हैं-

1. स्वामी धर्मानन्द विद्यामार्तण्ड आर्यभिक्षु पुरस्कार
(वैदिक विद्वानों के लिए)
2. स्वामी आत्मबोध सरस्वती कर्मवीर पुरस्कार
(एकनिष्ठ ब्रह्मचारी के लिए)
3. ब्र.अखिलानन्द आर्यभिक्षु पुरस्कार
(वैदिक सिद्धान्तों एवं आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में योगदान हेतु)

ये पुरस्कार उन लोगों के लिए हैं, जिन्होंने अपना जीवन सर्वतो भावेन आर्यसमाज और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित किया हुआ है।

उन आवेदन कर्ताओं को वरीयता प्रदान की जायेगी, जिनकी आय का कोई साधन नहीं होगा।

आवेदन पत्र 5 मार्च 2023 तक भेजा जा सकता है।
कार्यक्रम मार्च मास के अन्तिम रविवार को सम्पन्न होगा।

प्रोफेसर (डॉ०) महावीर अग्रवाल, मंत्री
मंत्री, माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास,
22, नन्द विहार, पोस्ट- गुरुकुल कांगड़ी-249404 (हरिद्वार)
चलभाष : 97190 04452

आर्यावर्त केसरी की सदस्यता हेतु खाते का विवरण

खाते का नाम : Aryawart kesari
बचत खाता सं. (SB A/C no) - 30404724002
आईएफसी कोड (IFSC code) - SBIN0000610
बैंक का नाम - स्टेट बैंक आफ इंडिया, अमरोहा
STATE BANK OF INDIA, AMROHA
हार्दिक धन्यवाद ।
--कृपया सदस्यता सहयोग भेजने के बाद मोबाइल पर अवगत भी कराने का कष्ट करें। सादर

डॉ. अशोक कुमार आर्य, संपादक

होली सामग्री का वितरण

होली है पर्यावरण शुद्धि एवं सौहार्द का पर्व : आचार्य संजीव रूप

(जिलाधिकारी मनोज कुमार ने कहा बहुत सराहनीय प्रयास)

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

बिल्सी, आर्य समाज गुधनी के अंतर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान समाज सुधारक आचार्य संजीव रूप के द्वारा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी पूरे जिले में सामग्री का वितरण किया जा रहा है। आचार्य संजीव रूप एवं उनके कार्यकताओं ने आज पूरे बिल्सी नगर तथा बदायूं शहर आदि अनेक स्थानों पर सामग्री के पैकेट का वितरण किया और सबको समझाया कि होली विश्व यज्ञ महोत्सव है। आचार्य संजीव रूप के निर्देशन में पूरे नगर बिल्सी में सामग्री के पैकेट निशुल्क बांटे गए! आचार्य संजीव रूप ने जिलाधिकारी मनोज कुमार को सामग्री भेंट की तथा सदर विधायक महेश चंद्र गुप्ता एवं बिल्सी विधायक हरीश शाक्य,जेल अधीक्षक तथा अनेक गणमान्यों को भी सामग्री के पैकेट भेंट किए। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बदायूं के प्रधान आचार्य

वेदव्रत एवं आर्य समाज के सभी सदस्यों को भी सामग्री बांटी गई। बिल्सी के पूर्व चेयरमैन अनुज वार्ष्णेय ने पर्यावरण की शुद्धि के लिए यह सर्वोत्तम उपाय बताया। फ्यूचर लीडर स्कूल बिल्सी के सभी शिक्षकों एवं बच्चों को भी आचार्य संजीव रूप ने होली का महत्व बताया तथा होली के पैकेट भेंट किए।आचार्य संजीव रूप ने कहा कि होली का पर्व पर्यावरण की शुद्धि तथा स्वास्थ्य को उत्तम बनाएं रखने के लिए वैज्ञानिक व सनातन उपाय है। आचार्य संजीव रूप ने लोगों से अनुरोध किया कि होली भाईचारे और प्रेम का त्यौहार है, झगड़ा लड़ाई हमारी उन्नति को रोकते हैं, हम बीती बातों को बुलाकर सब से प्रेम करें। होली में चोरी करके लकड़ी का इस्तेमाल ना करें, गाय या भैंस के गोबर के उपले ज्यादा मात्रा में जलाएं और सामग्री कपूर आदि चढ़ाएं, इससे वातावरण पवित्र होगा। आचार्य संजीव रूप ने बताया कि 31 सौ परिवारों तक सामग्री पहुंचाई जाएगी । जिलेभर में आचार्य संजीव रूप के इस कार्य की प्रशंसा हो रही है। हरिओम वर्मा धीरज सक्सेना राजीव सक्सेना विपिन जोहरी मनोज जोहरी रजनीकांत अग्रवाल तहसील बिल्सी परिसर क्षेत्राधिकारी बिल्सी के सभी अधिकारियों एवं थाना बिल्सी में भी सामग्री बांटी गई। लगभग 100 से अधिक गांव में भी सामग्री का वितरण किया जा चुका है

आर्यावर्त केसरी समाचार

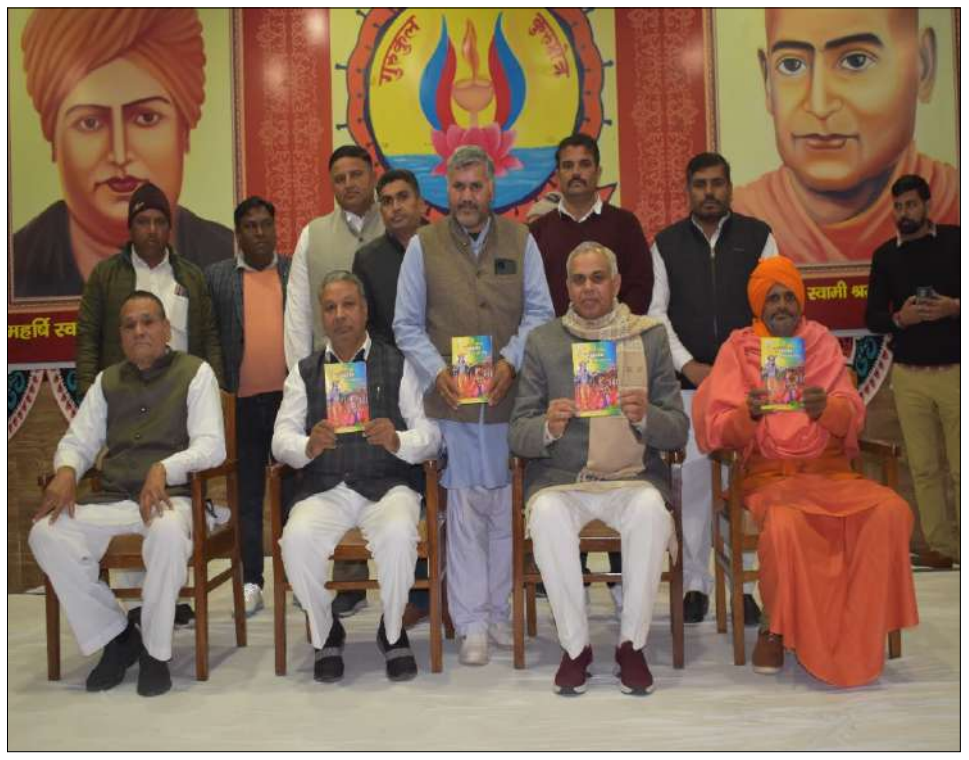

आचार्य देवव्रत जी, गवर्नर गुजरात द्वारा वैदिक गीता ज्ञान की राशि नामक पुस्तक का लोकार्पण। कुरुक्षेत्र गुरुकुल में आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की बैठक के दौरान मोहन लाल धमार्चार्य द्वारा लिखित पुस्तक वैदिक गीता का लोकार्पण गुजरात के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ राजेन्द्र विद्यालंकार ओ एस डी(गवर्नर),श्री राधाकृष्ण आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, महामंत्री श्री उमेद शर्मा, स्वामी नित्यानंद जी तथा हरियाणा से आए विभिन्न जिलों के प्रतिनिधियों ने भागीदारी दी।

विशाल महिला आर्य महासम्मेलन आयोजित

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

शिवरात्रि (बोध दिवस) के अवसर पर आर्य समाज महर्षि दयानंद सेवा सदन कुरुक्षेत्र के तत्वावधान में आयोजित किया गया विशाल महिला आर्य महासम्मेलन। मुख्य वक्ता डॉ राजेन्द्र विद्यालंकार

जी ने कहा कि शिवरात्रि एक बोध का पर्व है जो हमें जागरूक करता है कि हमारे परिवार समाज व राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य क्या हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने धर्म व संस्कृति में जो भी कुरितियां आ गई थी उनको दूर किया, साथ में महिलाओं को वेद पढ़ने का एवं यज्ञ करने का अधिकार दयानंद सरस्वती जी के जनजागरण अभियान से ही संभव हुआ।" इस अवसर पर श्रद्धेय स्वामी विदेह योगी जी ने कहा कि शिव एक सच्चे योगी थे जिन्होंने समस्त मानव जाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। इस विशाल महिला सम्मेलन को आर्य समाज की यशस्विनी भजनोपदेशिका बहन संगीता आर्या जी ने अपने मधुर संगीतमय भजनों के माध्यम से सम्बोधित करते हुए कहा कि यदि घर की बहन बेटी और बहु आर्य परम्परा को ऋषियों की पद्धति के अनुसार निभाती हैं तो उनकी संतान सदैव परिवार, समाज व राष्ट्र का कल्याण ही करेंगी और कभी पथ से भ्रष्ट नहीं होंगी।

इस कार्यक्रम की शुरूआत यज्ञ हवन से हुई जिसमें मुख्य यज्ञमान- श्री रामहेर शास्त्री व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रजनी शर्मा, चैयरमेन ब्लाक समिति कुरुक्षेत्र तथा बहन सुलक्षणा कपूर जी रहे। मंच संचालन समाज के उपमंत्री मोहन लाल धमार्चार्य द्वारा किया गया। समाज के प्रधान श्री हीराराम आर्य ने समस्त आर्य जनों का आभार व्यक्त किया। विशेष सहयोग आर्य समाज थानेसर का रहा। आर्य समाज की कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा समस्त आर्य बहनों को ऋषि दयानंद का चित्र एवं सत्यार्थ प्रकाश और वेद विमर्श नामक पुस्तक देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम के उपरान्त ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रत्यक्ष व परोक्ष सभी सदस्यों का एवं दान दाताओं का पूरे आर्य समाज कुरुक्षेत्र की ओर से ह्रद्याभार एवं धन्यवाद। नोटः-सभी ध्यान दें यह कार्यक्रम आर्य समाज महर्षि दयानंद सेवा सदन कुरुक्षेत्र के तत्वावधान में ऋषि दयानंद सरस्वती जी की द्वितीय जन्मशताब्दी वर्ष के पावन अवसर पर चलने वाले दो वर्षीय कार्यक्रमों का आगाज है, अतः भविष्य में तन, मन व धन से सभी सहयोगी बनें।

डॉ0 विश्वमित्र आचार्य आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के प्रधान निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा जनपद ऊधमसिंह नगर की नई कार्यकारिणी गठित की गई। जिसमें डॉ0 विश्व मित्र आचार्य प्रधानर, चौ0 शीशपाल राणा, शत्रुघ्न मौर्य उपप्रधान, प्रभाष चन्द्र अग्रवाल मंत्री, डॉ0 अशोक आर्य उपमंत्री, दयाकृष्णपाल उपमंत्री, विनीत कुमार पाठक कोषाध्यक्ष, ओमप्रकाश मलिक, नरपति सिंह आर्य उपाकोषाध्यक्ष, महेंद्रपाल आर्य अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग, अधिष्ठाता आर्यवीर दल- महेन्द्रपाल आर्य, लेखा निरीक्षक नरेंद्र कुमार आर्य बने।

आर्य समाज मन्दिर हिसार में होली मिलन समारोह आयोजित

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

हिसार। प्रस्तुत है आर्य समाज मन्दिर, आर्य नगर, जिला-हिसार (हरियाणा) में होली (फाग) के पावन पर्व पर सम्पन्न हुए नव सस्येष्टि यज्ञ एवं होली मिलन समारोह की कुछ झलकियां । श्री सीताराम आर्य के ब्रह्मत्व में हुए नव सस्येष्टि यज्ञ में तीन यज्ञमान दम्पतियों (श्री नवनीत आर्य व श्रीमती ऋतु आर्या, श्री सत्य प्रकाश आर्य व श्री मती पूनम आर्या तथा श्री राजेश कुमार आर्य व श्री मती शारदा आर्या) ने अग्नि देवता को घी सामग्री के साथ नए अध पके अन्न (चने की टाट व गेहू की बालिया) की आहुतियां दी । श्री आर्य जी ने आर्य समाज, आर्य नगर की स्थापना समय से आज तक के गौरवशाली इतिहास और गतिविधियों का खाका प्रस्तुत किया । इस सुअवसर पर आयु० दीदी अंशुल आर्या, मुस्कान आर्या, वन्दिता आर्या ने अपने मधुर गीतों की प्रस्तुतियां दी । दूधिया श्री सीताराम आर्य ने एक ईश्वर भक्ति का गीत गाया । चि० आयुष आर्य ने अपनी कविता प्रस्तुत की । प्रधान श्री कर्नल ओमप्रकाश आर्य व मन्त्री श्री महेन्द्र सिहं आर्य ने आर्य समाज की गति विधियों को सबके सहयोग से आगे बढाने का संकल्प दोहराया । कार्यक्रम समापन पर सबने प्रसाद का आनन्द लिया ।

पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज के कासगंज (उत्तर प्रदेश) में दि. 8,9 व 10 अप्रैल 2023 को प्रस्तावित योग चिकित्सा विज्ञान शिविर हेतु घर घर तक योग पहुचाने के संकल्प के साथ प्रचार करते कार्यकर्ता व प्रतिनिधि गण।

बारह पत्थर मैदान में 8 अप्रैल से होगा स्वामी रामदेव का विशाल योग विज्ञान चिकित्सा शिविर

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

कासगंज (उत्तर प्रदेश)। विश्व प्रसिद्ध योग गुरु स्वामी रामदेव जी महाराज का विशाल एवम् भव्य योग विज्ञान चिकित्सा शिविर दिनांक 8, 9 व 10 अप्रैल 2023 को कासगंज के प्रसिद्ध बारा पत्थर मैदान में होने जा रहा है। यह जानकारी देते हुए पतंजलि योगपीठ के प्रभारी श्री जे.सी. चतुर्वेदी ने बताया कि इस योग शिविर की तैयारियां युद्ध स्तर पर की जा रही है। इतना भव्य एवं विशाल योग शिविर जनपद कासगंज में पहली बार संपन्न होने जा रहा है।

आर्यावर्त केसरी

विविध दर्शन

पाक्षिक हिन्दी समाचार पत्र, अमरोहा (उत्तर प्रदेश)
16 से 31 मार्च 2023

अंतिम पृष्ठ

126 वें बलिदान दिवस पर प.लेखराम को दी श्रद्धांजलि

शुद्धि आन्दोलन की भेंट चढ़ गए पंडित लेखराम - ठाकुर विक्रम सिंह

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

नई दिल्ली/ प्रवीण आर्य। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में अमर शहीद,रक्त साक्षी प. लेख राम आर्य मुसाफिर के 126 वें बलिदान दिवस पर 6 मार्च को आर्य समाज लाजपत नगर नई दिल्ली में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। ज्ञातव्य है कि एक धर्मान्ध मुसलमान द्वारा शुद्धि अभियान से रूष्ट होकर 6 मार्च 1897 को लाहौर में छुरा मारकर हत्या कर दी गई थी। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि सत्यनिष्ठ, धर्मवीर, आत्म बलिदानी पं लेखराम अडिग ईश्वर विश्वासी,महान मनीषी,स्पष्ट निर्भीक वक्ता,आदर्श धर्म प्रचारक,त्यागी तपस्वी गवेषक,अच्छे लेखक थे। धर्मान्तरण रोकने और धर्मान्तरित लोगों की घर वापसी व शुद्धि करण के लिए ही पण्डित लेखराम ने अपना जीवन आहूत कर दिया और उनकी हत्या कर दी गई। इस अवसर पर वैदिक विद्वान आचार्य विद्या निवास मिश्र व आर्य नेत्री विमलेश बंसल ने भी संबोधित किया। उन्होंने ने कहा कि नई पीढ़ी को हिन्दू धर्म के योद्धाओं के इतिहास को बतलाने की आवश्यकता है और घर वापसी के अभियान चलाने की आवश्यकता है। मुख्य अतिथि ठाकुर विक्रम सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि पं. लेखराम ने महर्षि दयानन्द की वैदिक मान्यताओं, सिद्धान्तों व उद्देश्यों के प्रचार को ही अपने जीवन का उद्देश्य बनाया था और अपनी योग्यता व पुरुषार्थ से वैदिक धर्म की महत्वपूर्ण सेवा व रक्षा की,उन्होंने अपने आगे पीछे कपड़े पर आर्य समाज के नियम लिखकर टांग रखे थे। सम्पूर्ण आर्य जगत व सभी वैदिक धर्मी उनकी सेवाओं एवं बलिदान के लिए सदा-सदा के लिए ऋणी व कृतज्ञ हैं।उनके बलिदान ने यह सिद्ध कर दिया कि वैदिक धर्म के विरोधियों के पास वेद और आर्यसमाज के सिद्धान्तों की काट व उनका उत्तर नहीं है। आज फिर से प.लेखराम जैसे वीरो की आवश्यकता है जो शास्त्रार्थ से वेद विरुद्ध बातों का युक्ति युक्त उत्तर दे सकें और विधर्मी हुए लोगों को शुद्ध करके वापिस हिन्दू धर्म में दीक्षा दे सकें। समारोह अध्यक्ष आर्य रवि देव गुप्ता ने कहा कि धर्मवीर पण्डित लेखराम ने अपनी नश्वर देह का त्याग करते हुए आर्यो को यह सन्देश दिया था, ह्यह्यतकरीर व तहरीर से प्रचार का कार्य बन्द न होह्व आज आर्यों को उनकी इस वसीयत को पूरा करना है,तभी भविष्य में वेदाज्ञा ह्यकृण्वन्तो विश्वमार्यम्ह्व चरितार्थ हो सकता है। आर्य समाज के प्रधान राजेश मेंडिरता ने सभी का आभार व्यक्त किया।पिंकी आर्य, अजय कपूर, सुरेन्द्र तलवार आदि के मधुर भजन हुए। प्रमुख रूप से आचार्य मेघश्याम वेदांलंकार,रविन्द्र आर्य, विजय मलिक, देवेन्द्र भगत, शकुंतला नागिया, जितेंद्र डावर, रमेश गाडी आदि उपस्थित थे।

मेरठ में ऋग्वेद पारायण महायज्ञ 27 अप्रैल से

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

मेरठ / चंद्रकांत। संसार के समस्त प्राणियों के कल्याण हेतु अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की 200 वीं जन्म जयंती (फाल्गुन कृष्ण दशमी २०२५ ई०) एवं आर्यसमाज स्थापना के १५० वर्ष (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा २०२५ ई०) को अत्यंत श्रद्धा, समर्पण एवं उत्साह से मनाने के लिए आर्यसमाज, सदर, मेरठ आप सभी महानुभावों के सहयोग एवं प्रेम से द्विवर्षीय कार्यक्रमों की कड़ी में पहला वृहत कार्यक्रम 27 अप्रैल से 07 मई 2023 (11 दिवस) तक आदरणीय डॉक्टर वेदपाल जी के ब्रह्मत्व में ऋग्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन कर रहा है। आयोजन समिति ने अपील की है कि ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाने हेतु आप स्वयं सपरिवार एवं इष्ट मित्रों के साथ सहभागिता सुनिश्चित करके आर्ष ग्रन्थों के प्रकांड पंडित आदरणीय डॉ० सहाब के मुखारविंद से परमपिता परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेदों के मन्त्रों की सरल एवं सारगर्भित व्याख्या सुनने का सुअवसर प्राप्त करें।

वैदिक सन्यास आश्रम में हुआ होली-नवसस्येष्टि महोत्सव

वासन्ति नवसस्येष्टि यज्ञ नई फसलों की प्रसन्नता का यज्ञ है-स्वामी आर्यवेश

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

गाजियाबाद/ प्रवीण आर्य। शंभू दयाल वैदिक सन्यास आश्रम,दयानन्द नगर के प्रांगण में स्वामी सत्यपति के ब्रह्मत्व में होली नवसस्येष्टि यज्ञ महोत्सव हर्षोल्लास से संपन्न हुआ,वेद पाठ आश्रम के ब्रह्मचारियों ने किया। आश्रमाध्यक्ष एवं आर्य जगत के सुप्रसिद्ध सन्यासी अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि वासन्ति नवसस्येष्टि यज्ञ नई फसलों की प्रसन्नता का यज्ञ है।यज्ञ से हम पर्यावरण शुद्धकर बीमारियों से बच सकते हैं।चेतन और जड़ देवताओं का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि माता,पिता गुरु आदि चेतन देवता हैं,इनकी सेवा श्रुषा भी यज्ञ है। जड़ देवताओं का मुख अग्नि है उसको जो हम समर्पित करते हैं,वह अपने पास नहीं रखती,सब जगह फैला देती है,सब को पंहुच जाता है।यह एक बहुत बड़ा विज्ञान है जो व्यक्तिगत जीवन तक सीमित न रहकर सार्वजनिक रूप में रहता है।धीरे धीरे लोग इस वैदिक स्वरूप को समझेंगे।वह ईश्वर इतना महान है जिसने ब्रह्मांड और मानव शरीर की रचना की है,उसकी उपासना जितनी की जाए कम है।यज्ञ संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म है,पर विस्तृत चर्चा की।अन्य जितने भी कार्य जिनसे प्राणी मात्र का उपकार होता है,यज्ञ हैं।होली की आज की चल रही विकृतियों को दूर करने का संदेश दिया।चारों यज्ञमानों को पुष्प वर्षा कर आशीर्वाद दिया और प्रभु से शतायु होने की प्रार्थना की। इस अवसर पर मुख्य रूप से श्रीमती एवं श्री सत्य केतु एडवोकेट, बालेश्वर त्यागी, राजेंद्र यादव, इंद्रवीर सिंह भाटी, अशोक अग्रवाल, मानसिंह, वेद व्यास, सुभाष शर्मा, पवन लाटा, राजपाल त्यागी, जितेंद्र आर्य, प्रवीण आर्य,उदयवीर, मंगल सिंह चौधरी आदि उपस्थित रहे। शांतिपाठ,प्रसाद वितरण के साथ महोत्सव संपन्न हुआ।

वैदिक कन्या गुरुकुल दबथला

निकट - किला परिक्षितगढ़, जनपद - मेरठ (उ०प्र०) 250406

- आर्ष पाठ विधि के साथ NCERT आधारित पाठ्यक्रम एवं परिवार जैसा वातावरण
- संस्कृत व्याकरण, वेद, दर्शन, गीता, उपनिषद् आदि की वैदिक शिक्षा
- गुरुकुल परिसर में CCTV कैमरों द्वारा सुरक्षा व्यवस्था, प्राकृतिक एवं सुरम्य वातावरण
- पौष्टिक एवं शुद्ध शाकाहारी भोजन और देशी गायों के दूध की नि:शुल्क व्यवस्था
- सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, पेन्टिंग और संगीत आदि का प्रशिक्षण
- वेदपाठ, यज्ञ, योग एवं वैदिक कर्मकाण्ड आदि का प्रशिक्षण
- सुयोग्य, परिश्रमी, समर्पित एवं प्रशिक्षित शिक्षिकाओं द्वारा अध्यापन
- भोजन, छात्रावास, शिक्षा, आदि की नि:शुल्क व्यवस्था
- समाज के सहयोग और दान से संचालित आवासीय शिक्षण संस्था

प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल संचालिका/ प्राचार्या
श्रीमती सोनिया आर्या
एम0 फिल् संस्कृत (स्वर्ण पदक)
एम0ए0 संस्कृत-हिन्दी-शिक्षाशास्त्र, बी0 एड0.

सम्पर्क सूत्र : 7409768692, 9870882098, 9368769326

!! ओ३म् !!

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती के शुभारम्भ

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा के तत्वावधान में

प्रान्तीय आर्य महा सम्मेलन एवम् आर्य प्रतिष्ठा सम्मान समारोह

दिनांक 2 अप्रैल 2023 (रविवार) समय : प्रातः 10 बजे
स्थानः मोतीलाल नेहरू पब्लिक स्कूल अर्बन इस्टेट, जीन्द

निवेदक

स्वागताध्यक्ष	संयोजक	संरक्षक	बौद्धिकाध्यक्ष	योगाचार्य
सूर्यदेव आर्य	श्रीकृष्ण दहिया	अश्वनी आर्य	विद्यासागर शास्त्री	योगेन्द्र शास्त्री

श्री, समृद्धि, यश, वैभव, सुस्वास्थ्य व दीर्घायुष्य की दें

मंगलकामनाएं

जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, अथवा किसी विशेष उपलब्धि जैसे पावन अवसरों पर अपने परिजनों, मित्रों व शुभचिन्तकों को बधाई व शुभकामनाएं देना न भूलें।

आओ आर्यावर्त केसरी के माध्यम से ऐसे बधाई संदेश व शुभकामनाएं प्रकाशित कराएं...

और प्रदान करें आर्यावर्त केसरी के प्रचार-प्रसार यज्ञ में 501/- की सहयोग रूपी पावन आहुति।

-सम्पादक (मोबा. : 9412139333)

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

सुंदर,सुशील,गृह कार्य मे दक्ष संस्कारित कन्या,कद 5ft. रंग-Fair जन्म-19/02/1991, शिक्षा- M.Com, PG Diploma in Accountancy (with computerized accounts &taxation), लखनऊ मे कार्यरत के लिए समकक्ष,संस्कारित युवक चाहिए। लखनऊ वासी को प्राथमिकता। सम्पर्क- 9975109603, 9984602766, 8318651664

वधू चाहिए

सोलन हिमाचल प्रदेश के प्रतिष्ठित मित्तल वैश्य परिवार के 30 वर्षीय युवक (5 फुट 8 इंच) योग्यता बीबीए/एमबीए निजी व्यवसाय । अच्छी आय। शुद्ध शाकाहारी हेतु संस्कारवान युवक के लिए सुयोग्य, सुशिक्षित, सुंदर, सुशील , संस्कारवान वधू चाहिए। जाति बंधन नहीं। संपर्क सूत्र : मो. 8360658863

संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्ध सम्पादक
वीरेन्द्र सिंह
(मोबा. : 8755268578)
साहित्य सम्पादक
डॉ. बीना 'आर्या'
सह सम्पादक :
पं. चन्द्रपाल 'यात्री' डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार, डॉ. ब्रजेश चौहान
टंकण - विकास अग्रवाल/इशरत अली
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य
मो0 9412139333

आर्यावर्त केसरी के प्रसार, विज्ञापन तथा समाचार आदि के सम्बन्धी किसी भी सूचना अथवा शिकायत के लिए कृपया इस नंबर पर सम्पर्क करें-
8755268578
वीरेन्द्र सिंह
प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक

ऋग्वेद — AAvl3e AA — यजुर्वेद

घर-घर पहुंचाएं ऋषि दयानंद का कालजयी

अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश

आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा की सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार की पावन मुहिम से जुड़िए

सत्यार्थ प्रकाश पर पाइए भारी छूट

दो साइजों में उपलब्ध हैं सत्यार्थ प्रकाश 15X20 /4 मोटा टाइप, पक्की जिल्द तथा 18X23 /8 आकर्षक टाइटल में उत्तम छपाई

सत्यार्थ प्रकाश में पूरे पृष्ठ पर वितरक या भेंट करता में लगेगा आपका या आपके परिवार का रंगीन चित्र । साथ ही आर्यवर्त केसरी में भी छपेगा आपका चित्र
जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, आदि शुभ अवसरों अथवा अपने प्रिय जनों की पुण्य स्मृति में भेंट कीजिए सत्यार्थ प्रकाश।

आज ही करें संपर्क : डॉ. अशोक कुमार आर्य

सामवेद — मो.94121 39333 कार्यालय 87552 68578 — अथर्ववेद

।। ओ३म् ।।

प्रो0 सुषमा गोगलानी
मो0 : 9582436134

प्रतिनिधि
अशोक कुमार गोगलानी
मो0 : 8587883198

HANDICRAFT

सुषमा कला केन्द्र

आकर्षक स्मृति चिन्ह तथा पारितोषिक सामग्री के लिए सम्पर्क करें।

-: मुख्य आकर्षण :-

पता : C-1/1904, चैरी काउंटी, ग्रेटर नोएडा (वैस्ट)

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी डॉ0 अशोक कुमार रुस्तगी (आर्य) द्वारा आर्यावर्त प्रिन्टर्स, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ0 प्र0) से मुद्रित व कार्यालय आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ0 प्र0) से प्रकाशित एवं प्रसारित। सम्पादक- डॉ0 अशोक कुमार रुस्तगी, मो0- 9412139333
E-mail : aryawartkesari@gmail.com